30.00

July 2011

मरयम

बीमार बच्ची

दिल की बात

तरबियत

इन्सानियत को निजात देने वाला

जीवन से 90 सबक़

हार के आगे जीत है

घर कैसे बसाया जाए?

अगर आपको 'मरयम' पसंद है तो....
इसे अपने रिश्तेदारों, साथियों और दोस्तों के बीच फैलाने में हमारी मदद कीजिए!

SUBSCRIPTION CHARGES WITHIN INDIA		
1 year	**12** issues	320/-
2 years	**24** issues	600/-
3 years	**36** issues	850/-

CONTACT NO.
+91-522-4009558
+91 9956 62 0017, 9695 26 9006
maryammonthly@gmail.com
LUCKNOW-INDIA

इमाम अली[अ०] शाबान में इस इस तरह मुनाजात किया करते थें:

ख़ुदाया! रहमत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद[स०] और आले मुहम्मद[अ०] पर।

और जब मैं दुआ करूँ तो मेरी दुआ को कुबूल कर ले। और जब मैं पुकारूं तो तो मेरी आवाज़ को सुन ले। जब मैं मुनाजात करूं तो तो मेरी तरफ़ तवज्जोह फ़रमा क्योंकि मैं तेरी ही तरफ़ भाग आया हूं और तेरे ही सामने खड़ा हूं। और तेरे सवाब का उम्मीदवार हूं। तू मेरे दिल का हाल जानता है। मेरी ज़रूरत को जानता है। मेरे ज़मीर को पहचानता है और तुझ से मेरा अंजाम छुपा हुआ नहीं है...मुहम्मद[स०] और आले मुहम्मद[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे उन लोगों में क़रार दे जो हमेशा तेरा ज़िक्र करें, तेरे वादे को न तोड़ें, तेरे शुक्र से ग़ाफ़िल न हों और तेरे हुक्म को हल्का न समझें। ऐ ख़ुदा! मुझे अपनी इज़्ज़त व जलालत के सबसे रौशन नूर से मिला दे तकि मैं तेरा आरिफ़ हो जाऊँ...

(मफ़ातीहुल जिनान / मुनाजाते शाबानिया)

Monthly Magazine

July
2011

मरयम

MARYAM

A Socio-Cultural & Religious Monthly Magazine

Editor
M. Hasan Naqvi

Editorial Board
M. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Fasahat Husain

Assist. Exec. Editor
M. Aqeel Zaidi

Contributors
Imtiyaz Abbas Rizwan
Mohammad Mohsin
Azmi Rizvi
Fatima

Graphic Designer
Siraj Abidi
9839099435

Typist
S. Sufyan Ahmad

इस महीने आप पढ़ेंगी...

जीवन से 10 सबक़	38
एहकाम	40
इन्सानियत को निजात देने वाला	22
दिल की बात	32
घर से बाहर	13
राहत की चुस्कियां (डिश)	16
घर कैसे बसाया जाए?	8
हार के आगे जीत है	29
पानी	25
कुरआन और साइंस	10
बीमार बच्ची (कहानी)	36
कुरआन में इमाम ज़माना	14
साइंस है क्या?	41
तरबियत	26
वीमेन राइट्स	19
परवरिश के कुछ बुनियादी उसूल	34
गुरूर और तकब्बुर	35
कुछ हक़ हमारे ऊपर	5
दूसरी दुनिया, दूसरे लोग	31

खुदा के नाम से जो बड़ा मेहरबान है...

जुहूर की तमन्ना करने वालों और आपका इंतेज़ार करने वालों का सलाम हो आप पर ऐ मौला! ऐ महबूब! ऐ ज़ेहरा के बेटे! ऐ बुबुव्वत की भीनी-भीनी ख़ूशबू! ऐ ख़ुदा की हुज्जत!

अब फिर हम हैं और हमारा इंतेज़ार...

आंखों से आंसू जारी हैं और दिल इश्क़ व मोहब्बत से चूर, आपके आने का शौक़ दिलों को ज़िंदगी देने वाला और आपके दीदार का इश्क़ दिल की ठंडक है।

ऐ मेहदी! ऐ दूसरे मुहम्मद[अ०]! ऐ हैदर के वारिस! ऐ हुसैन[अ०] के ख़ून का बदला लेने वाले!

जब आप आएंगे तो परेशानियां दूर हो जाएंगी। शहरों और आबादियों में अमन व अमान फैल जाएगा। जुल्म व सितम के महल वीरान हो जाएंगे। ख़ुदा का नूर और दीन की रौशनी सारी दुनिया में नज़र आएगी। कमज़ोर लोग ज़मीन पर हुकूमत करेंगे...

हाँ! ऐ हमारे ज़माने के इमाम! हम आपके इंतेज़ार में अपनी आँखें बिछाए हुए हैं, हमारे दिल आपकी याद में धड़क रहे है और हम ही नहीं बल्कि सारी दुनिया को आपका इंतेज़ार है। लोग दुख-दर्द, मुसीबतों और परेशानियों से चूर-चूर होकर बेतहाशा चीख़ रहे हैं। क्योंकि दुनिया में हर तरफ़ जुल्म और ज़्यादतियां इस क़द्र बढ़ चुकी है कि दुनिया में बसने वाले एक-एक पाक दिल इंसान की सारी उम्मीदें टूट चुकी हैं और अगर कोई उम्मीद बाक़ी बची है तो वह सिर्फ़ और सिर्फ़ आपकी बाबरकत ज़ात है।

हमें नहीं पता कि आप कब आएंगे लेकिन इतना ज़रूर मालूम है कि जब भी आएंगे तो दुनिया आपके नूर से नूरानी हो जाएगी, जुल्म के बादल छट जाएंगे, हर तरफ़ होंटों पर मुस्कराहट होगी, फ़िज़ा में भीनी-भीनी ख़ुश्बू होगी और हर तरफ़ एक पाक माहौल होगा जिसमें अगर कुछ होगा तो बस तौहीद की झलकियां और आपका पाक वुजूद...

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नही है।
'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।
इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले 'मरयम' से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।
संपादक 'मरयम' के लिए आने वाले कंटेंट्स मे ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer & publisher S. Mohammad Hasan Naqvi printed at Imagine Grafix, 4-Valmiki Marg,Lalbagh, Lucknow and published from 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017, 9695269006
email: maryammonthly@gmail.com

कुछ हक़ हमारे ऊपर

इमाम सज्जाद अ० की ज़ुबानी

इमाम ज़ैनुल आबेदीन अ० की विलादत के मुबारक मौक़े हम इमाम के रोज़मर्रा की ज़िंदगी के बारे में बताए हुए उसूल पेश कर रहे हैं। साथ ही इमाम की विलादत पर आप सबको दिली मुबारकबाद भी देते हैं...

इमाम ज़ैनुल आबेदीन अ० उन इमामों में से हैं जिन्हें कुछ दिनों के लिए कुछ सूकून की ज़िंदगी बिताने का मौक़ा मिला जिसमें आपने इस्लामी मसलों और इस्लामी उलूम को लोगों के सामने पेश किया।

वक़्त से फ़ाएदा उठाते हुए आपने घरेलू और समाजी ज़िंदगी को बेहतर बनाने के लिए एक किताब लिखी जिसमें कुछ ऐसे क़ीमती उसूल बताए कि अगर उन पर चला जाए तो समाज से बहुत सी बुराईयां ख़त्म हो सकती है।

हम इन हक़ और उसूलों में से कुछ को आपके लिए पेश कर रहे है:-

(1) **ख़ुदा का हक़:** ख़ुदा का हक़ यह है कि किसी को उसका शरीक न बनाओ, ख़ुलूस और अक़ीदत से उसकी हम्द करो, अपने सारे दुनियावी और आख़ेरत के कामों में उसे अपने लिए काफ़ी समझो, उसपर पूरा ईमान रखो, इस यक़ीन के साथ कि जो कुछ तुम्हें पसंद है वह तुम्हारे लिए रखे हुए है।

(2) **नफ़्स का हक़:** नफ़्स का हक़ यह है कि तुम इसे अल्लाह की इताअत में मशग़ूल रखो यानी जिस्म के सारे हिस्सों से वही काम लो जिनके लिए उन्हें बनाया गया है।

(3) **ज़बान का हक़:** ज़बान का हक़ यह है कि इन्सान बातचीत में ज़बान को बुरी बातो और गाली-गलोच से बचाए, उसे अच्छाई के लिए इस्तेमाल करे, फ़ालतू, बेकार और बिला वजह की बातों से बचाए, लोगों के साथ प्यार-मोहब्बत से बात करे, सही जगह पर बात करे और अपनी ज़बान को अदब-तहज़ीब से सजाए। ख़ामोश रहने की जगह पर ख़ामोश रहे और बोलने की जगह पर शाइस्तगी से बोले।

(4) **कान का हक़:** कान का हक़ यह है कि बेहतरीन आसमानी लहजे को सुने और जिन बातों का सुनना जाएज़ नहीं है उनसे बचे।

(5) **आंख का हक़:** आंख का हक़ यह है कि जिन चीज़ों का देखना जाएज़ नहीं है उनसे बचे और निगाह हटा ले।

(6) **हाथ का हक़:** हाथ का हक़ यह है कि उसे जाएज़ चीज़ों के लिए इस्तेमाल किया जाए, मज़बूत हाथ कमज़ोरों को पकड़ने और गिरते हुए लोगों को संभालने के लिए होता है। दुनिया की रस्मो-रिवाज है कि दीनी रहबरों के हाथ पर बैअत की जाए, उनकी इताअत की जाए और जो कुछ वह कहें उसपर अमल किया जाए। हाथ इसलिए है कि आख़ेरत में सवाब लेने के लिए दुनिया में लोगों पर माल ख़र्च करने के लिए खुला रखा जाए और दुनिया की इस थोड़ी सी ज़िंदगी में अल्लाह की रिज़ा और आख़ेरत में सवाब पाने के लिए नेक कामों में इस्तेमाल किया जाए। साथ ही इसे खुला रखकर अपनी अक़्ल, फ़ज़्ल और शरफ़ को दिखाया जाए।

(7) **पैरों का हक़:** यह है कि उन्हें हराम और नाजाएज़ रास्तों पर एक क़दम भी न उठाया जाए और जो भी रास्ता चुनना चाहो उसमें जल्दी न करो, थोड़ा ठहरो, सोच-समझ लो ताकि सबसे रोशन, क़रीबी और आसान रास्ते को चुन सको। ऐसा न हो कि जल्दी में ऐसा रास्ता चुन लो जो तुम्हें मौत के पास ले जाए और जहन्नम में ढकेल दे।

(8) **पेट का हक़:** पेट का हक़ यह है कि उसे हलाल ग़िज़ा से ख़ाली न रखो और हराम ग़िज़ा से बचाए रहो।

(9) शर्मगाह का हक़:
इसका हक़ यह है कि इसे ज़िना और नामेहरम की नज़र से बचाए।

इमाम का अपनी इन बातों पर अमल

इमाम[अ०] ने ख़ुद अपने अमल से अपनी इन बातों में जान डाल दी है। अब हमें ये देखना है कि इमाम[अ०] ने इस बारे में क्या किया है ताकि हम उससे सबक़ लेकर अपनी ज़िंदगी को सुधार सकें।

ख़ुदा के हक़ की अदाएगी

ख़ुदा का हक़ अदा करने और उसके एक होने को मानने के बारे में इमाम का कलाम इंसानियत का सबसे बुलंद कलाम है। आपका कलाम एक ऐसी शख़सियत का कलाम है जो मख़लूक़ से बिल्कुल कटकर अपने ख़ालिक़ से जा मिली है। आपका कलाम हज़रत अली[अ०] के कलाम से बिल्कुल मिलता जुलता है।

अब देखते हैं कि इमाम ने ख़ुदा का हक़ किस तरह अदा किया ताकि उससे सबक़ हासिल किया जाए। ज़ाहिर है कि ख़ुदा का हक़ उसकी हम्द है, उसके एक होने का यक़ीन पैदा करना है और ये बात तय है कि बग़ैर हम्द के उसकी बारगाह में पहुँचा ही नहीं जा सकता।

इमाम[अ०] रात के सन्नाटे में अल्लाह से लौ लगाते हैं और उसकी हम्द इस तरह करते हैं:

हम्द उस ख़ुदा की जो मुझे इस तरह माफ़ करता है कि अब मेरा कोई गुनाह नहीं रह गया है मेरा परवरदिगार मेरे नज़दीक हर चीज़ से ज़्यादा पसंद और हर चीज़ से ज़्यादा तारीफ़ के लायक़ है उस ख़ुदा की हम्द कि मैं सिर्फ़ उसी से उम्मीद रखता हूँ और ख़ुदा के अलावा किसी और से उम्मीद नहीं रखता अगर ख़ुदा के अलावा किसी और से उम्मीद रखूँ तो मेरी उम्मीद कभी पूरी न होगी। उस ख़ुदा की हम्द जिसने दिन और रात को अपनी क़ुदरत से पैदा किया और फ़िर अपनी क़ुदरत से ही दोनों को अलग-अलग किया फिर उनमें से कभी एक को घटाता है और दूसरे को बढ़ाता है फिर उस बढ़े हुए हिस्से को दूसरे को देता है और दोनों को बराबर कर देता है। उस ख़ुदा की हम्द जिसने हम लोगों को अपनी पहचान कराई और शुक्र की तालीम दी हमारे लिए मारफ़त के दरवाज़े खोल दिए जिससे हम ने अपने परवरदिगार को पहचान लिया। उसने अपनी ख़ालिस तौहीद की तरफ़ हम लोगों की रहनुमाई की हमें इनकार और शक से दूर रखा, ऐसी हम्द कि जब तक ज़िन्दा रहूँ उसकी हम्द करने वालों में शुमार होता रहूँ। और जब ज़िन्दगी ख़त्म हो जाए तो उसकी रज़ा और अफ़ो की तरफ़ चला जाऊँ।

ऐ परवरदिगार! तू जो चाहता है करता है, जिसे चाहे अज़ाब दे जिसे चाहे अपनी रहमत से नवाज़ दे जिस चीज़ से और जिस तरह चाहे। न कोई तुझ से बड़ा है कि तेरे काम पर सवाल करे और किसी में इतनी हिम्मत और ताक़त नहीं है कि तेरी सलतनत और बादशाहत पर दावा करे। तू अपनी हुकूमत में न किसी को शरीक करता है और न अपने हुक्म में किसी से डरता है। सारा हुक्म सिर्फ़ तेरे लिए है। तू ही सबका पैदा करने वाला है और तू ही सबसे बड़ा है। हर तरह की बुराईयों से पाक, हर तरह के ऐब से दूर और सारी तारीफ़ों से ऊपर है। उसका शुक्र और उसकी हर उस नेमत पर शुक्र जो उसने हमें और सारे बंदों को दी है या आगे देगा। उसकी हर नेमत पर इतना शुक्र जिसका इल्म और अंदाज़ा ख़ुद उसको है। और वह भी क़यामत तक।

ऐ वह ज़ात कि जिसकी तारीफ़ ख़ुद तारीफ़ करने वालों को निजात दिलाती है। ऐ वह ज़ात कि जिसकी इताअत ख़ुद इताअत करने वालों को छुटकारा दिलाती है। तू रहमत नाज़िल कर मुहम्मद और उनकी औलाद पर। तू हमारे दिल को अपनी याद के लिए दूसरों की याद से ख़ाली करदे।

नफ़्स के हक़ की अदाएगी

नफ़्स के हक़ के अदा करने का मतलब यह है कि अपने सारे बदन से सही रास्ते पर चलने के लिए काम लिया जाए। उसकी बागडोर नफ़्सानी ख़्वाहिशात के हाथों में न दी जाए बल्कि उसको अक़्ल के कंट्रोल में रखा जाए। इमाम[अ०] इस हक़ीक़त के बेहतरीन आइडियल हैं। वह हमेशा ख़ुदा के होकर रहे और उन्होंने ख़ुद को ख़ुदा के हवाले कर दिया था हमें चाहिए कि उनसे सबक़ हासिल करें और देखें कि मासूमीन[अ०] ख़ुद क्या करते हैं और हम लोगों से क्या चाहते हैं ताकि हम लोग उनके रास्ते पर चलें।

इमाम[अ॰] ने नफ़्से इन्सानी के बारे में हमें इस तरह नसीहत की, ''ऐ नफ़्स! तू दुनियावी ज़िंदगी से कितनी और कब तक मुहब्बत करेगा और कब तक इस दुनिया पर भरोसा करेगा। क्या तू अपने गुज़रे हुए बाप-दादाओं से और अपने उन दोस्तों से जिनको ज़मीन ने अपने अन्दर छुपा लिया है और अपने उन भाईयों से जिन्हें तूने मुसीबत में पड़ा हुआ पाया है और अपने उन साथियों से जिन्हें तूने खुद अपने हाथों से ज़मीन में दफ़्न किया है जबकि इससे पहले वह ज़मीन के ऊपर थे, उनके सारे बदन गल गए हैं, अब उनके घर और उनके घर के सहेन उनसे खाली हैं, नसीहत हासिल नहीं करेगा। वह दुनिया से चले गए और जो कुछ जमा किया था वह यहीं छोड़ गए और अब क़ब्र में आराम कर रहे हैं।

ज़बान के हक़ की अदाएगी

इमाम कभी भी सच बात के अलावा कोई और बात पसन्द नहीं करते थे। और ऐसा क्यों न हो, बचपन में या तो पैग़म्बर की हदीसें सुनीं या उन लोगों की बातें सुनीं जो रसूल के पाले हुए थे या फिर क़ुरआनी आवाज़ें जो कि ख़ानदाने रिसालत में हर तरफ़ से बुलंद होती रहती थीं। इसके बाद थोड़ा सा अपने जद्दे बुर्ज़ुगवार का कलाम सुना जो दिल की गहराईयों में बैठा हुआ था। इसलिए जब इमामत आपको मिली तो आप ग़लत बातों को सुनने के लिए तैयार नहीं थे। उस वक़्त की मुख़ालिफ़ हुकूमत की तरफ़ से झूठ को आम किया जा रहा था। लेकिन आप सख़्त से सख़्त पाबन्दियों के बाद भी लोगों के कानों तक सच्ची बात पहुंचा रहे थे।

आंख के हक़ की अदाएगी

आंख का हक़ यह है कि उससे हराम चीज़ों पर नज़र न डाली जाए और अईम्मए ताहिरीन[अ॰] के अमल और किरदार में इसके लिए कोई जगह नहीं क्योंकि यह खुद दीन की इज़्ज़त हैं। हराम चीज़ों की तरफ़ देखना तो बहुत दूर की बात यह बुराई का ख़्याल तक नहीं करते। इसलिए हराम चीज़ों के देखने का सवाल ही नहीं होता।

हाथ के हक़ की अदाएगी

इमाम[अ॰] की दुनिया बख़्शिश व सख़ावत और खुले हाथ वालों की दुनिया है आपका दस्तरख्वान हमेशा बिछा रहता था आपका हाथ गिरते हुए लोगों के लिए सहारा था माले दुनिया में से आपके पास जो कुछ भी होता सब राहे खुदा में दे देते अपनी फ़िक्र न करते और जो कुछ रखते वह दूसरों को देने के लिए रखते थे। इसलिए सारे ज़रूरतमंदों की नज़र आपकी तरफ़ उठती। एक बार आप एक ऐसे शख़्स के पास गए जो आख़िरी सांसें ले रहा था और कर्ज़दार होने की वजह से रो रहा था। इमाम[अ॰] ने उसका क़र्ज़ अपने ज़िम्मे ले लिया। कनीज़ों और ग़ुलामों को आज़ाद करते वक़्त उन पर अपना माल खर्च करते उन्हें मकान ज़मीन और उनकी दूसरी ज़िन्दगी की ज़रूरतों को पूरा करते थे। आप अक्सर घरों के ख़र्चे उठाते थे। मशहूर शायर फ़रज़दक़ ने आपकी तारीफ़ में क़सीदा कहा तो इमाम[अ॰] ने कई हज़ार दिरहम उनके पास भेज दिए और अक्सर अपना माल अल्लाह की राह में दे दिया करते थे।

पांव के हक़ की अदाएगी

इमामे ज़ैनुल आबिदीन[अ॰] हर इंसान से ज़्यादा सच्चाई के रास्ते पर थे। हमेशा उन जगहों पर जाया करते थे जहां उन्हें हक़ बोलने का मौक़ा मिल सके। मस्जिद में आते मिमबर पर बैठते ख़ाने काबा की तरफ़ हज व उमरा के लिए जाते। हुसैनी क़ाफ़िले के साथ मैदाने करबला में क़दम रखा इसलिए कि यह बेहतरीन जगह होने वाली थी। इस तरह से आपने हमेशा मुनासिब और सही रास्ते पर क़दम रखा।

घर कैसे बसाया जाए...

■ उज़मा नक़वी

घर बसने की पहली मंज़िल शादी है। समाज में जब किसी की शादी हो जाती है तो यही कहा जाता है कि "उसने शादी करके अपना घर बसा लिया।"

क्या आपको इसका अंदाज़ा है कि यह शादी कितनी अहम चीज़ है?

हमारे इस सवाल का बिल्कुल यह मतलब नहीं है कि आपने शादी में कितना ख़र्च किया, रिसेप्शन किस होटल में हुआ, कितने तरह के खाने थे, कितनी नामवर शख़्सियतों ने शिरकत की, जहेज़ में क्या-क्या था, वग़ैरा-वग़ैरा।

यह तो इंसान जब अपने माल पर इतराता है तो उसकी नुमाईश के लिए बहाने ढूंढता है और उनमें से एक बेहतरीन बहाना जहां माल की ज़्यादा से ज़्यादा नुमाईश हो सके वह शादी है।

हमारे ख़्याल से तो अगर खुदा ने किसी को ज़्यादा माल दिया है तो उसका एक बेहतरीन इस्तेमाल यह भी है कि जिन ग़रीबों के पास शादी के पैसे न हों उनकी शादी करा दे, न कि शादी के स्टेटस को इतना बढ़ा दिया जाए कि ग़रीब बेचारा शादी ही न कर पाए।

शादी के अहम होने का यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि कैसे हो बल्कि यह है कि किससे हो क्योंकि यह इंसान की पूरी ज़िंदगी का मामला है। इसीलिए जिससे शादी की जाए उसको शरीके हयात यानी लाइफ़ पार्टनर कहा जाता है क्योंकि दोनों पूरी ज़िंदगी एक दूसरे के सुख-दुख हर हाल में साथी होते हैं।

फ़ारसी ज़बान में इसको पेवंद कहा जाता है, जब कपड़ा कहीं से फट जाए तो उस पर जो दूसरा कपड़ा लगा कर सिला जाता है उसको पेवंद कहते हैं।

यही काम लड़की-लड़के का है कि इनको ज़िंदगी गुज़ारने के लिए जो ज़रूरत महसूस हो वह अपने लाइफ़ पार्टनर से पूरा कर सकें और एक दूसरे की सपोर्ट बन सकें।

जैसा कि खुदा क़ुरआने मजीद में फ़रमाता है, "उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हारा जोड़ा तुम ही में से पैदा किया है ताकि तुम्हें उससे सुकून हासिल हो और फिर तुम्हारे बीच मुहब्बत व रहमत क़रार दी है।" (1)

इस आयत में पहली चीज़ जो ख़ास है वह यह कि दोनों एक दूसरे के जैसे हों यानी बराबर हों।

यहां फिर यह सवाल उठता है कि किस चीज़ में बराबर हों?माल, फ़ैमिली, स्टेटस, समाजी स्टैन्डर्ड, शक्ल व सूरत वग़ैरा में या किसी और चीज़ में।

हांलाकि इन चीज़ों में बराबरी देखी भी नहीं जा सकती क्योंकि यह चीज़ें घटती बढ़ती रहती हैं शायद इसलिए इस्लाम ने इन चीज़ों की बराबरी को बराबरी नहीं माना है बल्कि ईमान व नेक आमाल की बराबरी को ही बराबरी माना है क्योंकि जितना ईमान बढ़ता जाता है उतनी ही इंसान की

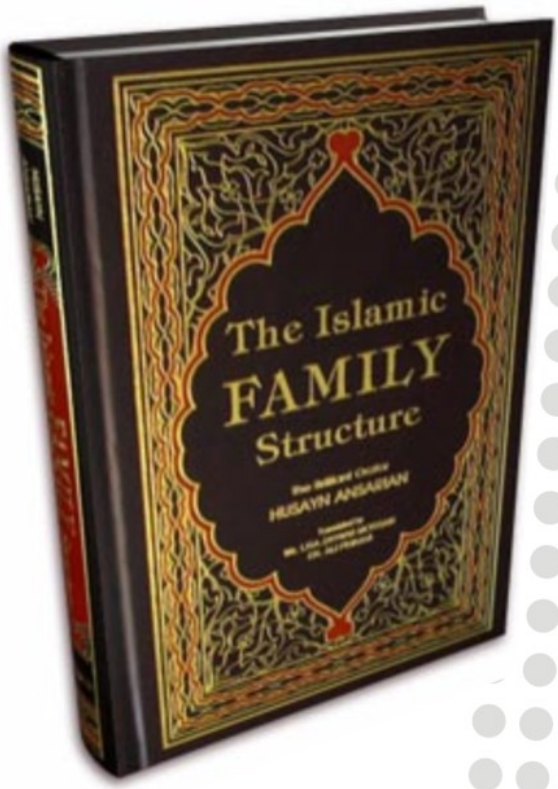

वैल्यू बढ़ती जाती है जैसा कि खुदा फ़रमाता है, ''ख़ुदा के नज़दीक ज़्यादा मोहतरम वही है जो ज़्यादा परहेज़गार है।'' [2]

दूसरी जगह पर है, ''ख़ुदा साहेबाने ईमान और जिनको इल्म दिया गया है उनके दर्जों को बुलंद करना चाहता है। [3]

दूसरा प्वाइंट जो इस आयत में बयान हुआ है वह यह है कि उसने तुम्हारा जोड़ा तुम ही में से पैदा किया है ताकि तुम्हें उससे सुकून हासिल हो, यानी शौहर बीवी के लिए और बीवी शौहर के लिए सुकून बने और किसी भी घराने के लिए यह बहुत ज़रूरी है, क्योंकि अगर यह दोनों एक दूसरे के लिए सुकून का ज़रिया नहीं होंगे तो घर, घर न होकर किसी दंगल का अखाड़ा बन जाएगा जिसमें हर छोटी-छोटी बात पर झगड़ा, चीख़-पुकार, हंगामा होगा जिसका ग़लत असर बच्चों और पड़ोसियों पर भी पड़ सकता है।

इसलिए उन दोनों को सुकून हासिल करने के लिए आपस में ऐसी अंडर स्टैन्डिंग करनी चाहिए जिसमें एक दूसरे का ख़्याल रखें, एक दूसरे के हक़ का ध्यान रखें और बहेरहाल यह इंसान हैं हो सकता है कि किसी से ग़लती भी हो जाए तो ऐसे में एक दूसरे की ग़लती को इग्नोर कर दें। और अगर कुछ कहना भी हो तो ऐसे कहा जाए कि ग़लती का पता भी चल जाए और बुरा भी न लगे।

तीसरी बात यह है कि ''तुम्हारे बीच मुहब्बत और रहमत क़रार दी है''। किसी भी शौहर व बीवी के बीच का असल रिश्ता यही है, कितनी भी शादी हो जाए, साथ रहने लगें अगर आपस में मुहब्बत नहीं है तो एक घर में होकर भी वह अलग-अलग हैं और साथ में रहकर भी अकेले हैं लेकिन अगर मुहब्बत का रिश्ता है तो घर जन्नत बन जाता है, और दूर रहकर भी लाइफ़ पार्टनर का साथ महसूस करते हैं।

इन चीज़ों को नज़र में रखकर ही एक अच्छा घर बस सकता है जिसमें सबसे अहम रोल औरत का होता है। किसी का कहना है, ''अगर औरत चाहे तो तिनके से घर को बसा दे और वही औरत चाहे तो सूई से घर को उजाड़ दे।''

यानी छोटी से छोटी चीज़ से भी औरत घर बसा सकती है और छोटी से छोटी चीज़ से उजाड़ भी सकती है क्योंकि घर की असल मैनेजर औरत ही होती है।

इसी तरह इंसान की दीनदारी में भी शौहर और बीवी का रोल एक दूसरे के लिए बहुत अहम है, इस्लाम चाहता है कि दोनों खुदा की इबादत करने में एक दूसरे का सहारा बनें।

बहुत मशहूर रिवायत है कि जनाबे फ़ातिमा[अ०] की शादी के दूसरे दिन रसूले खुदा[स०] अपने दामाद हज़रत अली[अ०] से सवाल करते हैं कि ऐ अली! फ़ातिमा को कैसा पाया?

हज़रत अली[अ०] ने कहा कि खुदा की इबादत में बेहतरीन मदद करने वाला पाया।

इस बातचीत से यह पता चलता है कि इसमें भी अहम रोल औरत का ही है शायद इसलिए रसूल[स०] फ़रमाते हैं, ''जो जवान चाहता है कि पाक व पाकीज़ा खुदा से मुलाक़ात करे उसको चाहिए कि शाइस्ता लड़की से शादी करे।''

दूसरी जगह आप फ़रमाते हैं, ''इस्लाम क़ुबूल करने के बाद सबसे अच्छी बात इंसान के लिए यह है कि शाइस्ता औरत से शादी करे। वह औरत जो अपनी निगाह से उसको खुश करे, उसकी इताअत करे। जब शौहर न हो तो अपनी पाकीज़गी और शौहर के माल की हिफाज़त करे। [4]

क़ुरआन व हदीस की इन बातों को ज़ेहन में रखकर अगर कोई अपना लाइफ़ पार्टनर तलाश करे तो उसका दुनिया का घर भी आबाद होगा और आख़िरत का भी।

यहां तक कि जो लोग रिश्ता लगवाते हैं उनके लिए भी इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं, ''राब्ता करवाने में सबसे अच्छा राब्ता यह है कि शादी के लिए राब्ता करवाए ताकि खुदा उन लोगों को मिला दे। [5]

1-सूरए रूम/21, -सूरए हुजरात/13, 3-सूरए मुजादेला/11, 4. वसाएल, 14/4, वसाएल, 14/27

क़ुरआन और साइंस

क़ुरआन और साइंस एक ऐसा सब्जेक्ट है जिस पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है और लिखा जा रहा है और लिखा जाता रहेगा। यह आर्टिकिल जो आपके सामने है इसमें हम कोई बहुत बड़ी रिसर्च पेश नहीं कर रहे हैं बल्कि सिर्फ़ कुछ ऐसी आयतें पेश कर रहे हैं जिनसे यह अंदाज़ा हो जाएगा कि क़ुरआने मजीद ने कितने ज़माने पहले वह बातें दुनिया के सामने पेश की हैं जो आज साइंटिस्ट कह रहे हैं।

इस आर्टिकिल में हम साइंस के हर सेक्शन के बारे में सिर्फ़ कुछ आयतों का रिफ्रेंस दे रहे हैं वरना अगर इस सब्जेक्ट पर लिखा जाए तो एक बड़ी किताब बन सकती है और लोगों ने इस सब्जेक्ट पर बहुत कुछ लिखा भी है...

हमारा यह यूनिवर्स 'मैटर' से बना है और मैटर से रिलेटेड हर साइंस को Physical Science कहते हैं।

Physics: "अल्लाह ही वह है जिसने आसमानों को बग़ैर किसी पिलर के बुलंद कर दिया है जैसा कि तुम देख रहे हो। उसके बाद उसने अर्श पर अपना इक़्तेदार क़ायम किया और चाँद व सूरज को मुसख़्ख़र किया वह एक तय वक़्त तक चलते रहेंगे। वही सारे कामों को चलाने वाला है। और अपनी आयतों को तफ़सील से बताता है कि शायद तुम लोग अपने पालने वाले की मुलाक़ात का यक़ीन कर लो।

वह ख़ुदा वह है जिसने ज़मीन को फैलाया और उसमें अटल पहाड़ खड़े कर दिए और नहरें दौड़ा दीं और हर फल का जोड़ा बनाया है। वह रात के पर्दे से दिन को ढांक देता है और इसमें समझ और अक़्ल रखने वालों के लिए बड़ी निशानियां हैं।

और ज़मीन के बहुत से टुकड़े आपस में मिले हुए हैं और अंगूर के बाग़ हैं और खेती है और खजूरें हैं जिनमें कुछ दो टहनियों वाली हैं और कुछ एक टहनी वाली और सब एक ही पानी से सींचे जाते हैं..." [1]

Meteorology: "वह ख़ुदा वह है जो हवाओं को रहमत की बशारत बनाकर भेजता है। यहां तक कि जब हवाएं भारी बादलों को उठा लेती हैं तो हम उन्हें मुर्दा शहरों को ज़िन्दा करने के लिए ले जाते हैं और फिर पानी बरसा देते हैं और उसके ज़रिए अलग-अलग हल पैदा कर देते है और इसी तरह हम मुर्दा को ज़िन्दा कर देते हैं कि शायद तुम नसीहत ले सको। [2]

Archeology: "उनसे पहले क़ौमें नूह, असहाबे रस और समूद ने भी झुटलाया था। और क़ौमे आद, फ़िरऔन और लूत के भाईयों ने भी और असहाबे ऐका और क़ौमे तुब्बा ने भी और उन सबने रसूलों को झुटलाया तो हमारा वादा पूरा हो गया। [3]

Geology: "अल्लाह ही वह है जिसने आसमानों को बिना किसी पिलर के उठा दिया है। जैसा कि तुम देख रहे हो। उसके बाद उसने अर्श पर अपना इक़्तेदार क़ायम किया और चाँद व सूरज को मुसख़्ख़र किया वह एक तय वक़्त तक चलते रहेंगे। वही सारे कामों को चलाने वाला है। और अपनी आयतों को तफ़सील से बताता है कि शायद तुम लोग अपने पालने वाले की मुलाक़ात का यक़ीन कर लो।

वह ख़ुदा वह है जिसने ज़मीन को फैलाया और उसमें अटल पहाड़ खड़े का दिए और नहरें दौड़ा दीं और हर फल का जोड़ा बनाया है। वह रात के पर्दे से दिन को ढांक देता है और इसमें समझ और अक़्ल रखने वालों के लिए बड़ी निशानियां हैं।" [4]

Astronomy: "वह सुबह के नूर का चीरने वाला है और उसने रात को सुकून का ज़रिया और

सूरज-चांद को हिसाब का ज़रिया बनाया है। यह उस हिकमत और इज़्ज़त वाले की तक़दीर है।

वही वह है जिसने तुम्हारे लिए सितारे बनाए हैं कि उनके ज़रिए ख़ुश्की और तरी के अंधेरों में रास्ता ढूंढ सको।" [5]

"वही वह है जिसने ज़मीन और आसमान को छः दिन में पैदा किया है और फिर अर्श पर अपना इक़्तेदार क़ायम किया। वह हर उस चीज़ को जानता है जो ज़मीन में दाख़िल होती है या ज़मीन से बाहर निकलती है और जो आसमान से नाज़िल होती है और आसमान की तरफ़ उठती है और वह तुम्हारे साथ है तुम जहां भी रहो।" [6]

"क्या तुमने नहीं देखा कि ख़ुदा ने तह ब तह सात आसमान बनाए हैं। और चांद को उनमें रोशनी और सूरज को रोशन चिराग़ बनाया है और अल्लाह ही ने तुमको ज़मीन से पैदा किया है। फिर तुम्हें उसी में ले जाएगा और फिर नई शक्ल में निकालेगा। और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बना दिया है।" [7]

Cosmology: "क्या ख़ुदा का इंकार करने वालों ने यह नहीं देखा कि यह ज़मीन और आसमान आपस में जुड़े हुए थे और हमने उनको अलग किया है। और हर जानदार को पानी से बनाया है। [8]

"और हमने आसमान से एक तय मिक़दार में पानी नाज़िल किया है और उसे ज़मीन पर ठहरा दिया है। जबकि हम उसे वापस भी ले जा सकते थे।" [9]

Chemistry: "और बेशक तुम्हारे लिए इन जानवरों में भी इबरत का सामान है कि हम उनके पेट में से तुम्हारे सेराब करने का इंतेज़ाम करते हैं और तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फ़ाएदे हैं और उनमें से भी तुम खाते हो। [10]

"क़सम है उनकी जो डूब कर खींच लेने वाले हैं। और आसानी से खोल देने वाले हैं। और फ़िज़ा में तैरने वाले हैं। फिर तेज़ी से आगे बढ़ जाने वाले हैं। फिर उमूर का इंतेज़ाम करने वाले हैं।" [11]

Geography: "वह चांद और सूरज दोनों के पूरब-पश्चिम का मालिक है।" [12]

"मैं सारे मशरिक़ और मग़रिब के परवरदिगार की क़सम खाकर कहता हूं कि हम क़ुदरत वाले हैं।" [13]

Biology: "तुम्हारे लिए जानवर भी इबरत की चीज़ हैं क्योंकि हम उनके पेट से गोबर और ख़ून के बीच से ख़ालिस दूध निकालते हैं जो पीने वालों के लिए बहुत ज़ाएक़ेदार होता है।" [14]

Medical Science: "इसके बाद अलग-अलग तरह के फलों को खाए और नर्मी के साथ ख़ुदाई रास्ते पर चले। जिसके बाद उसके पेट से अलग-अलग तरह के मशरूब बाहर आएंगे जिसमें पूरी इंसानियत के लिए शिफ़ा का सामान है।" [15]

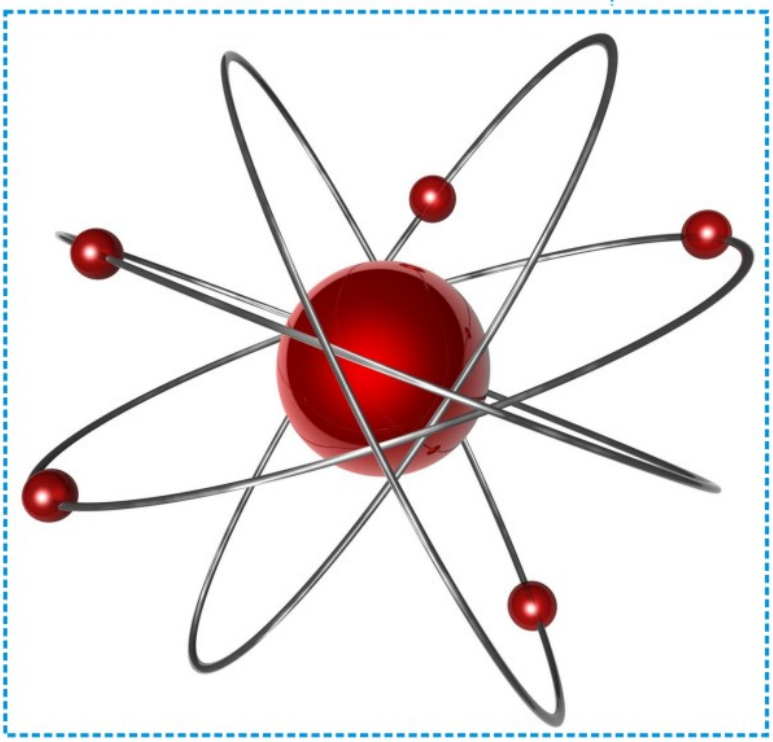

Embryology: "ऐ लोगो! अगर तुम्हें दोबारा उठाए जाने में शक है तो यह समझ लो कि हमने ही तुम्हें पहले मिट्टी से बनाया है। फिर नुतफ़े से, फिर जमे हुए ख़ून से, फिर गोश्त के लोथड़े से, जिसमें से कोई पूरा हो जाता है और कोई अधूरा ही रह जाता है ताकि हम तुम्हारे ऊपर अपनी क़ुदरत को साफ़ कर दें और हम जिस चीज़ को जब तक चाहते हैं पेट में रखते हैं। उसके बाद तुमको बच्चा बनाकर बाहर ले आते हैं। फिर ज़िंदा रखते हैं ताकि जवानी की उम्र तक पहुंच जाओ और तुम में से कुछ को उठा लिया जाता है और कुछ को पस्त तरीन उम्र तक बाक़ी रखा जाता है ताकि जानने के बाद फिर कुछ जानने के क़ाबिल न रह जाएं।" [16]

Zoology: "और ज़मीन में कोई भी रेंगने वाला या दोनों परों से उड़ने वाला परिंदा ऐसा नहीं है जो अपनी जगह पर तुम्हारी तरह की जमाअत न रखता हो। हमने किताब में किसी चीज़ के बताने में कोई कमी नहीं की है।" [17]

"और तुम्हारे पालने वाले ने शहद की मक्खी को इशारा किया कि पहाड़ों, पेड़ों और घरों की ऊंचाईयों में घर बनाएं। उसके बाद अलग-अलग फलों से गिज़ा लें और नर्मी के साथ ख़ुदाई रास्ते पर चलें। जिसके बाद उसके पेट से अलग-अलग तरह के मशरूब निकलेंगे। जिसमें सारे इन्सानों के लिए शिफ़ा है। और इसमें भी ग़ौर करने वाली क़ौम के लिए एक निशानी है। [18]

Anatomy: "ऐ लोगो! अगर तुम्हें दोबारा उठाए जाने में शक है तो यह समझ लो कि हमने ही तुम्हें पहले मिट्टी से बनाया है। फिर नुतफ़े से, फिर जमे हुए ख़ून से, फिर गोश्त के लोथड़े से, जिसमें से कोई पूरा हो जाता है और कोई अधूरा ही रह जाता है ताकि हम तुम्हारे ऊपर अपनी क़ुदरत को साफ़ कर दें और हम जिस चीज़ को जब तक चाहते हैं पेट में रखते हैं। उसके बाद तुमको बच्चा बनाकर बाहर ले आते हैं। फिर ज़िंदा रखते हैं ताकि जवानी की उम्र तक पहुंच जाओ और तुम में से कुछ को उठा लिया जाता है और कुछ को पस्त तरीन उम्र तक बाक़ी रखा जाता है ताकि जानने के बाद फिर कुछ जानने के क़ाबिल न रह जाएं।" [19]

"फिर नुत्फ़े को अलक़ा बनाया और फिर अलक़े से मुज़्ग़ा बनाया और फिर मुज़्ग़े से हड्डियां पैदा कीं और हड्डियों पर गोश्त चढ़ाया है और फिर हमने उसे एक दूसरी मख़लूक़ बना दिया है। तो कितनी बरकत वाला है वह ख़ुदा जो सबसे बेहतर पैदा करने वाला है।" [20]

Botany: "ख़ुदा ही है वह जो गुठली और दाने को चीरने वाला है। वह मुर्दे से ज़िंदा और ज़िंदे से मुर्दे को निकालता है।" [21]

"वह ख़ुदा वह है

जो हवाओं को रहमत की बशारत बनाकर भेजता है। यहां तक कि जब हवाऐं भारी बादलों को उठा लेती हैं तो हम उन्हें मुर्दा शहरों को ज़िंदा करने के लिए ले जाते हैं और फिर पानी बरसा देते हैं और उसके ज़रिए तरह-तरह के फल पैदा कर देते हैं। और इसी तरह हम मुर्दों को ज़िंदा कर दिया करते हैं...।" [22]

"अल्लाह ही ने आसमान से पानी बरसाया है और उसके ज़रिए से ज़मीन को मुर्दा होने के बाद दोबारा ज़िंदा किया है...।" [23]

"फिर हमने इस पानी से तुम्हारे लिए खुर्मे और अंगूर के बाग़ पैदा किए हैं जिनमें बहुत ज़्यादा फल पाए जाते हैं। और तुम उन्हीं में से कुछ खा भी लेते हो।" [24]

"क्या उस दाने को भी देखा है जिसको तुम ज़मीन में बोते हो।" [25]

Psychological Sciences: "वह रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल करता है। और वह सीनों के राज़ों को भी जानता है।" [२६]

Law: "यह आपसे पहले भेजे जाने वाले रसूलों में हमारी सुन्नत रही है और आप हमारी सुन्नत में कोई बदलाव नहीं पाएंगे। [27]

"बेशक हमने हर चीज़ को अंदाज़ें के मुताबिक़ पैदा किया है।" [28]

Education: "और उसे बयान सिखाया है।" [29]

"नून-क़लम और उस चीज़ की क़सम जो यह लिख रहे हैं।" [30]

"उस ख़ुदा का नाम लेकर पढ़ो जिसने पैदा किया है। उसने इन्सान को जमे हुए ख़ून से पैदा किया है। पढ़ो और तुम्हारा पालने वाला बड़ा करीम है।" [31]

Economic Sciences & Politics: "ऐ ईमान वालो! अपनी पाक कमाई और जो कुछ हमने ज़मीन से तुम्हारे लिए पैदा किया है सब में से ख़ुदा की राह में ख़र्च करो। और ख़बरदार इंफ़ाक़ के लिए ख़राब माल को हाथ भी न लगाना कि अगर यह माल तुमको दिया जाए तो आंख बंद किए बिना छुओगे भी नहीं। याद रखो कि ख़ुदा सबसे बेनियाज़ है...।" [32]

"और जो लोग सूद खाते हैं वह लोग क़यामत के दिन उस आदमी की तरह उठेंगे जिसे शैतान ने छूकर बावला कर दिया हो। क्योंकि उन्होंने यह कह दिया है कि तिजारत भी सूद जैसी है। जबकि ख़ुदा ने तिजारत को हलाल किया है और सूद को हराम। अब जिसके पास ख़ुदा की नसीहत आ गई और उसने सूद को छोड़ दिया तो पिछला कारोबार का मामला ख़ुदा के ज़िम्मे है। और जो इसके बाद भी सूद लें तो वह लोग सब जहन्नमी हैं। और वहीं हमेशा रहने वाले हैं। [33]

"अगर तुमने ऐसा न किया तो ख़ुदा और रसूल से जंग करने के लिए तैयार हो जाओ। और अगर तौबा कर लो तो असल माल तुम्हारा ही है। न तुम ज़ुल्म करोगे न तुम पर ज़ुल्म किया जाएगा।" [34]

Sociology: "नेकी यह नहीं है कि अपना रूख़ पूरब और पश्चिम की तरफ़ कर लो बल्कि नेकी उस शख़्स का हिस्सा है जो अल्लाह और आख़ेरत, फ़रिश्तों और किताब और नबियों पर ईमान लाए। और ख़ुदा की मोहब्बत में रिश्तेदारों, यतीमों, मिसकीनों, ग़रीब मुसाफ़िरों, सवाल करने वालों और ग़ुलामों की आज़ादी के लिए माल दे और नमाज़ क़ायम करे और ज़कात अदा करे और जो भी वादा करे उसे पूरा करे और फ़क़रो-फ़ाक़ा में और परेशानियों और बीमारियों और मैदाने जंग के हालात में सब्र करने वाले हों, तो यही लोग अपने ईमान के दावे और एहसान में सच्चे हैं और यही तक़वे वाले और परहेज़गार हैं। [35]

"और उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हारा जोड़ा तुम्हीं में से पैदा किया है ताकि तुम्हें उससे सुकून मिले और फिर तुम्हारे बीच मोहब्बत और रहमत पैदा की है, इसमें ग़ौर करने के लिए बहुत सी निशानियां पाई जाती हैं। और उसकी निशानियों में से आसमान और ज़मीन की पैदाईश और तुम्हारी ज़बानों और रगों का फ़र्क़ भी है...। [36]

"याद रखो कि दुनिया की ज़िंदगी सिर्फ़ एक खेल-तमाशा, आराईश, आपस में एक दूसरे पर फ़ख़्र और माल और औलाद की ज़्यादती का मुक़ाबला है। और बस जैसे कोई बारिश हो जिसकी पैदावार किसानों को भली लगती है और उसके बाद वह फिर सूख जाए, फिर तुम उसे पीला देखो और आख़िर में वह रेज़ा-रेज़ा हो जाए। और आख़ेरत में सख़्त अज़ाब भी है और मग़फ़ेरत और रिज़ाए ईलाही है। और दुनिया की ज़िंदगी तो बस एक धोके का सरमाया है और कुछ नहीं है।" [37]

1-सूरए राद/2-4, 2-आराफ़/57, 3-क़ाफ़/12-14, 4-राद/2-4 , 5-अनआम/96-97, 6-हदीद/4, 7-नूह/15-19, 8-अम्बिया/30, 9-मोमेनून/18, 10-मोमेनून/21, 11-नाज़ेआत/1-5, 12-रहमान/17, 13-मआरिज/40, 14-नहल/66, 15-नहल/69, 16-हज/5, 17-अनआम/38, 18-नहल/68-69, 19-हज/5, 20-मोमेनून/14, 21-अनआम/95, 22-आराफ़/57, 23-नहल/65, 24-मोमेनून/19, 25-वाक़ेआ/63, 26-हदीद/6, 27-बनी इस्राईल/77, 28-क़मर/49, 29-रहमान/4, 30-क़लम/1, 31-अलक़/1-3, 32-बक़रा/267, 33-बक़रा/275, 34-बक़रा/279, 35-बक़रा/177, 36-रूम/21-22, 37-हदीद/20

घर से बाहर

■ बतूल अज़रा फ़ातिमा

आज का वेस्टर्न कल्चर असली सुकून को पाने के लिए तरस रहा है। ख़ासकर शादीशुदा ज़िंदगी में तो प्यार, मोहब्बत और ज़ेहनी सुकून ख़्म सा हो गया है। हर इंसान हर चीज़ में अपना मुनाफ़ा ढूँडता है और ज़्यादा से ज़्यादा मुनाफ़ा पाने की कोशिश में लगा रहता है और अपनी इस भागदौड़ में वह हर चीज़ को उठाकर पीछे रखकर वह बहुत आगे निकल जाता है। तब कहीं जाकर उसे कुछ याद आता है लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। इस तरह घरेलू मामले और ज़्यादा उलझ जाते हैं। शादीशुदा ज़िंदगी में मियाँ-बीवी को एक इंवेस्टमेंट कम्पनी की तरह मुनाफ़ा हासिल करने की उम्मीद में एक-दूसरे की मदद करनी पड़ेगी, कुछ क़ुर्बानियाँ देनी पड़ेंगी तभी कामयाबी की उम्मीद की जा सकती है। आपको मालूम है कि यह मुनाफ़ा कौनसा है? दुनिया और आख़ेरत एक साथ...

बहुत से एक्सपर्टस जो घरेलू मामलों पर रिसर्च करते हैं और ऐसे ही बहुत से सेंटर्स ने शादीशुदा ज़िंदगी के बढ़ते हुए मामलों के बारे में अपनी परेशानियों को सामने रखा है। उन्हीं में से एक मामला यह है जो शादी के बाद ख़ासतौर से उभर कर उस वक़्त सामने आता है जब बीवी घर से बाहर क़दम निकालती है। यह आज के दौर ही की देन है क्योंकि आज चारों तरफ़ से वीमेन राइट्स के नारों की आवाज़ आ रही है। इसलिए औरत घर से बाहर अपनी ताक़त आज़माने निकलती है। इसके अलावा भी घर से बाहर निकलने की कई वजहें हो सकती हैं। या तो औरत घर से बाहर मर्द के कहने पर जाती है या ज़बरदस्ती या फिर अपनी मर्ज़ी से। लेकिन ज़्यादातर देखा यह गया है कि इसका नतीजा वक़्ती ख़ुशियों के अलावा और कुछ नहीं होता। लेकिन अगर इस्लामी और अख़लाक़ी उसूलों पर चलकर इससे पूरा-पूरा फ़ायदा उठाया जाए तो दुनिया में भी संवर सकती है और आख़िरत भी।

औरतें अपनी घरेलू ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में अगर बैलेंस बनाए रखें और अख़्लाक़ी उसूलों का ख़्याल रखें तो ज़ेहनी सुकून भी मिलेगा और समाजी सुकून भी। औरत को जॉब करने के साथ-साथ घरेलू ज़िम्मेदारियाँ भी संभालनी पड़ती हैं। उसे एक साथ दो-दो काम करने होते हैं जिसकी वजह से कभी-कभी मुश्किल सामने आ सकती है। इस बात के ज़्यादा चांसेज़ हैं कि औरत अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाने में कहीं न कहीं कमी कर दे। अगर घरेलू ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में हद से ज़्यादा कमी हो जाएगी तो उसके ज़ेहन में नौकरानी रखने का ख़्याल आएगा जिससे कुछ आराम तो मिल जाएगा और घर का काम भी वक़्त पर हो जाएगा। लेकिन असल में इस तरह वह अपने शौहर और बच्चों से दूर हो जाएगी। वह अपने शौहर की ज़रूरतों का ख़्याल और बच्चों की देखभाल अपने हाथों से नहीं कर पाएगी क्योंकि वह यह सारे काम नौकरानी पर छोड़ देगी जिसका नतीजा हमेशा बुरा ही होता है।

बहेरहाल अगर कोई औरत किसी भी वजह से जॉब करना ही चाहती है तो उसे इस बात का पूरा-पूरा ख़्याल रखना पड़ेगा कि घरेलू ज़िम्मेदारियां, बच्चों से मोहब्बत और उनकी देखभाल और शौहर से रिलेशन में कोई कमी न होने पाए। यानी जॉब इस तरह की हो कि उससे घर के माहौल पर निगेटिव असर न पड़ रहा हो। क्योंकि ख़ुदा ने मर्द के अंदर यह सलाहियत रखी ही नहीं है कि वह बच्चों की अच्छी परवरिश कर सके, यह क्वालिटी सिर्फ़ औरतों के अंदर ही पाई जाती है और उनके लिए नेचुरल भी है कि वह समाज को अच्छे बच्चे दे सकें। बच्चों की परवरिश औरतों की तौहीन नहीं है जैसा कि आज के ज़माने में कुछ लोगों को यह कहते सुना गया है बल्कि यह तो इतनी बड़ी फ़ज़ीलत और फ़ख़्र की बात है जिसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। मर्दों के अंदर तो यह सलाहियत पाई ही नहीं जाती, इसीलिए तो नर्सरी-के.जी. के बच्चों के लिए ज़्यादातर लेडी टीचर्स रखी जाती हैं।

मैं उन लोगों में से नहीं हूँ या उन लागों का साथ नहीं दे रही हूँ जो औरतों को जॉब करने से रोकते हैं या उन्हें पढ़ने नहीं देते। कुछ तो ऐसे दीनदार लोग भी हैं जो अपनी बेटियों को तालीम देने से भी रोकते हैं और साथ ही यह भी चाहते हैं कि उनकी बीवियाँ और बेटियाँ मर्द डॉक्टर के बजाए लेडी डॉक्टर से इलाज कराएँ। वह इस बात को बिल्कुल नहीं समझते कि अगर लड़कियाँ नहीं पढ़ेंगी तो उनकी बच्चियों के लिए लेडी डॉक्टर कहां से आएंगी और अच्छी टीचर्स कहाँ से आएंगी?

इस्लाम औरतों को काम करने से नहीं रोकता बल्कि उसने उनके लिए कुछ क़ानून और हदें बनाई हैं:-

1-औरत जो काम करना चाहे वह काम जायज़ होना चाहिए।

2-औरत अपने पर्दे और पाकीज़गी का पूरा-पूरा ध्यान रखे।

3-उसके बाहर के काम से घरेलू ज़िम्मेदारियों पर कोई नेगिटिव असर न पड़ रहा हो।

4-अपने शौहर और औलाद का हक़ अच्छी तरह से पूरा करे, उसमें कोई कमी न हो।

5-कोई काम शरीअत के ख़िलाफ़ न हो।

कुरआन में इमामे ज़माना अ०

■ फ़साहत हुसैन

इससे पहले वाले इशू में आपने पढ़ा कि लगभग सारे बड़े मज़हबों की किताबों में आख़िरी ज़माने में आने वाले एक ऐसे नेक शख़्स का ज़िक्र है जो मुसीबतों और परेशानियों में घिरी हुई इन्सानियत को निजात देगा और एक आइडियल समाज बनाएगा। इस्लाम में और दूसरे सारे मज़हबों में फ़र्क़ यह है कि उनमें सिर्फ़ यह बताया गया है कि एक ऐसा शख़्स आएगा मगर उसकी बहुत ज़्यादा क्वालिटीज़ नहीं बयान की गई हैं लेकिन इस्लाम ने इस शख़्सियत का पूरी तरह इन्ट्रोडक्शन करवाया है कि वह कौन है, किस नस्ल से है, कब पैदा हुए, उनके आने से पहले क्या निशानियां सामने आएंगी और वह आकर किस तरह दुनिया को अदल व इंसाफ़ से भरेंगे, उनकी हुकूमत का तरीक़ा क्या होगा?

ज़ाहिर है कि यह नहीं हो सकता है कि कुरआन ने इस अहम सब्जेक्ट के बारे में कुछ भी न कहा हो। इसीलिए हम देखते हैं कि कुरआन ने बहुत सी जगहों पर इसके बारे में बात की है।

इमामे ज़माना अ० से रिलेटेड आयतें पेश करने से पहले हमारे लिए यह जानना ज़रूरी है कि कुरआन ने बहुत सी जगहों पर किसी टॉपिक को खुलकर नहीं बयान किया है और उसकी तरफ़ सिर्फ़ इशारा करके, जिस शख़्स के बारे में बातचीत हो रही है उसकी कुछ क्वालिटीज़ बयान करके या एक आम क़ानून की सूरत में अपनी बात पेश की है। जिसकी तफ़सील रसूले ख़ुदा स० और उनके जांनशीनों ने बयान की हैं।

इमामे ज़माना अ० के बारे में कुछ आयतें

1- "हमने ज़िक्र के बाद ज़ुबूर में भी लिख दिया है कि हमारी ज़मीन के वारिस हमारे नेक बन्दे ही होंगे।"

इस आयत में 'ज़िक्र' का मतलब जनाबे मूसा पर नाज़िल होने वाली किताब 'तौरैत' है। और ज़ुबूर हज़रत दाऊद पर नाज़िल होने वाली किताब है। यानी ख़ुदा ने इन दोनों किताबों में यह बात बयान की है कि ज़मीन के वारिस नेक बंदे होंगे।

इस आयत को पढ़ने के बाद हर शख़्स

आसानी के साथ यह बात समझ सकता है कि आयत किसी ख़ास वाक़ेए को नहीं बयान कर रही है बल्कि ख़ुदा के एक क़ानून को बयान कर रही है जो दुनिया के आख़िरी ज़माने के बारे में है कि हर ज़माने में ज़रूरी नहीं है कि ख़ुदा के नेक बंदों की ज़मीन पर हुकूमत हो जैसा कि यही होता रहा है कि ज़्यादातर ज़ालिमों ने हुकूमत की है लेकिन ख़ुदा का फ़ैसला यह है कि आख़िरकार उसकी ज़मीन के वारिस उसके नेक बंदे होंगे यानी ज़मीन पर उसके नेक बंदों की हुकूमत होगी।

रिवायात में इस आयत की तफ़सीर में कहा गया है कि 'नेक बंदों' का मतलब इमामे ज़माना[अ०] और उनके सहाबी हैं जिनके ज़रिए इमाम इस पूरी ज़मीन पर ख़ुदा की हुकूमत बनाएंगे।

इमाम बाक़िर[अ०] फ़रमाते हैं, "इस आयत में नेक बंदों का मतलब आख़िरी ज़माने में इमामे ज़मान[अ०] के सहाबी हैं।" (1)

इस रिवायत के अलावा शिया और अहले सुन्नत की किताबों में बहुत सी ऐसी रिवायतें हैं जिनमें रसूल[स०] और उनके जांनशीनों ने बताया है कि आख़िरी ज़माने में ज़मीन पर ख़ुदा के नेक बंदों की हुकूमत होगी और पैग़म्बर[स०] की औलाद में से एक शख़्स इस दुनिया को अदल व इंसाफ़ से भर देगा। मिसाल के तौर पर यह रिवायत बहुत मशहूर है, "अगर दुनिया ख़त्म होने में सिर्फ़ एक दिन भी बाक़ी रह जाएगा तो ख़ुदा उस दिन को इतना लम्बा कर देगा कि मेरे अहलेबैत में से एक नेक और सालेह शख़्स दुनिया को उसी तरह अदल व इंसाफ़ से भर देगा जिस तरह वह ज़ुल्म से भरी होगी।"

बहुत सी तबदीलियों के बावजूद आज भी तौरैत के डेविड सेक्शन में यह जुमले मौजूद हैं। इस सेक्शन के चैप्टर 37 सेन्टेंस 9 में है, "बुरे लोगों का कोई बस नहीं चलेगा लेकिन ख़ुदा पर भरोसा करने वाले ज़मीन के वारिस होंगे।"

चेप्टर 37 सेन्टेंस 18 में लिखा है, "ख़ुदा नेक बन्दों का दिन जानता है और उनकी मीरास हमेशा के लिए होगी।"

इन जुमलों में भी नेक बंदों का ज़िक्र है जिस तरह ख़ुदा ने क़ुरआन में फ़रमाया है कि ज़मीन के वारिस उसके नेक बंदे होंगे।

2- "हम यह चाहते हैं कि जिन लोगों को ज़मीन में कमज़ोर बना दिया गया है उन पर एहसान करें और उन्हीं लोगों का पेशवा बनाएं और ज़मीन का वारिस क़रार दे दें।" (2)

यूं तो यह आयत फ़िरऔन और बनी इस्राईल के बारे में है लेकिन इसे पढ़ने के बाद आसानी के साथ यह समझा जा सकता है कि क़ुरआन की बहुत सी आयतों की तरह यह आयत भी उस ख़ास ज़माने के बारे में नहीं है बल्कि इसमें ख़ुदा अपना एक इरादा और क़ानून बयान कर रहा है।

ख़ुदा का इरादा यह है कि बातिल पर हक़ को जीत हासिल होगी। मज़लूम हमेशा मज़लूम नहीं रहेंगे बल्कि एक ऐसा दिन आएगा जब इसी दुनिया में ज़ालिम अपने अंजाम तक पहुंचेंगे और नेक लोगों की हुकूमत होगी।

ख़ुदा के इस इरादे का एक नमूना पैग़म्बरे इस्लाम[स०] की बनाई हुई हुकूमत थी क्योंकि नबुव्वत की शुरूआत में आपको और आपके चाहने वालों को बहुत ज़्यादा तकलीफ़ें दी गईं और उन पर ज़ुल्म किया गया लेकिन उसके बाद ख़ुदा ने आपको और आपके मानने वालों को इज़्ज़त दी और दुनिया की बड़ी-बड़ी ताक़तें उनके सामने झुक गईं।

उसके बाद इस आयत की तफ़सीर आख़िरी ज़माने में इमामे ज़माना[अ०] की हुकूमत है जो इस पूरी दुनिया पर होगी।

हज़रत अली[अ०] नहजुल बलाग़ा में फ़रमाते हैं, "दुनिया हम से दूर होने के बाद आख़िरकार हमारे ही पास आएगी।" (3)

इसके बाद आप इसी आयत की तिलावत करते हैं। हज़रत अली[अ०] ने अख़िरकार दुनिया के अपने यानी अहलेबैत[अ०] की तरफ़ वापस आने का ज़िक्र करने के बाद इस आयत की तिलावत की जिससे पता चलता है कि अहलेबैत[अ०] और उनके मानने वालों पर ज़ुल्म होता रहा है और अहलेबैत[अ०] से उनका हक़ छीन लिया गया है और दुनिया के ख़त्म होने से पहले ख़ुदा अहलेबैत की एक शख़्सियत को पूरी दुनिया की हुकूमत देगा और उसे ज़मीन का वारिस बनाएगा।

इसी तरह एक हदीस में है, "इस आयत से मुराद आले मुहम्मद[स०] हैं। उन पर ज़ुल्म होने के बाद ख़ुदा उनके मेहदी[अ०] को सामने लाएगा, उन्हें इज़्ज़त देगा व उनके दुश्मनों को ज़लील करेगा। (4)

इमाम सज्जाद[अ०] फ़रमाते हैं, "उस ख़ुदा की क़सम जिसने हज़रत मुहम्मद[स०] को बशारत देने वाला और डराने वाला बनाया हम अहलेबैत में से नेक लोग और उनके मानने वाले जनाबे मूसा और उनके मानने वालों की तरह हैं और हमारे दुश्मन और उनके साथी फ़िरऔन और उसके साथियों की तरह हैं। (5)

यानी जिस तरह फ़िरऔन और उसके साथी जनाबे मूसा और बनी इस्राईल पर ज़ुल्म करते थे लेकिन ख़ुदा ने जनाबे मूसा और बनी इस्राईल को फ़िरऔन पर कामयाब किया, इसी तरह अहलेबैत[अ०] और उनके मानने वाले ज़ालिमों पर कामयाबी हासिल करेंगे और अहलेबैत[अ०] में से हज़रत इमाम मेहदी[अ०] दुनिया पर हुकूमत करेंगे।

1- मजमउल बयान, 6/172, 2- सूरए क़िसस/5, 3- कलिमाते क़िसार/209, 4-शेख़ तूसी, किताबुल ग़ैबत/184, 5- मजमउल बयान

राहत की चुस्कियां

गर्मी के मौसम में राहत देने के लिए लाजावाब समर कूलर्स से बेहतर और क्या हो सकता है! आम पन्ना जैसी घरेलू रेसिपी का मज़ा तो आप हर साल चखती होंगी, इस बार हम आपके लिए लेकर आए हैं गर्मी के मौसम में राहत पहुंचाने वाले कुछ अनूठे कूलर्स।

ऑरेंज पैशन

एक गिलास के लिए

संतरे का जूस – 100 मिली
संतरे के टुकड़े – 8
पैशन फ्रूट सिरप – 10 मिली
गार्निशिंग के लिए – ऑरेंज ट्विस्ट

तरकीब

संतरे के टुकड़ों को सर्विंग गिलास में डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। गिलास में क्रश्ड आइस और पैशन फ्रूट सिरप डालें। मिक्स करें। मॉकटेल के ऊपर संतरे का जूस डालें और उसे भी अच्छी तरह से मिलाएं। ऑरेंज ट्विस्ट से गार्निश करें और सर्व करें।

समर सेंसेशन

एक गिलास के लिए

अन्नानास जूस –600 मिली
सोडा –ज़रूरत के मुताबिक़
इलायची –6 से 8 दाने
नीबू का रस –ज़रा सा
चाश्नी –ज़रा सी
गार्निशिंग के लिए अन्नानास

तरकीब

अन्ननास के टुकड़ों को सर्विंग गिलास में डालकर अच्छी तरह से मिला दें। गिलास को क्रश्ड आइस से भर दें। उसमें नीबू का रस और चाश्नी डालें। मॉकटेल के ऊपर सोडा डालें। अच्छी तरह से मिलाएं। अन्नानास के एक टुकड़े से गार्निश करें।

कुकंबर पंच

एक गिलास के लिए

खीरा (छोटे टुकड़ों में कटा हुआ) – 8 टुकड़े
पुदीना पत्ती – 8
सोडा – 100 मिली
स्प्राइट – 100 मिली
गार्निशिंग के लिए – खीरा

तरकीब

खीरा के स्लाइस, आईस क्यूब्स और पुदीना की पत्तियों को ब्लेंडर में 10 सेकेंड तक ब्लेंड करें। फिर इसे सर्विंग गिलास में डालें और उसके ऊपर से सोडा और स्प्राइट डालें। खीरे के स्लाइस से गार्निश करें।

वाटरमेलन कूलर

एक गिलास के लिए

तरबूज़ जूस –100 मिली
तरबूज़ के टुकड़े –8
ऑरेंज सिरप –10 मिली
चाश्नी –ज़रा सी
गार्निशिंग के लिए – पुदीना पत्ती और नीबू का स्लाइस

तरकीब

तरबूज़ के टुकड़ों को सर्विंग गिलास में डालें और अच्छी तरह से मिला दें। गिलास में क्रश्ड आइस, ऑरगेट सिरप और चाश्नी डालें। मॉकटेल के ऊपर तरबूज़ का जूस डालें और अच्छी तरह से मिलाएं। पुदीना पत्ती और नीबू के स्लाइस से गार्निश करें।

वफ़ाओं का भरम है अ० अब्बास

मेरी जानिब यह तेरी चश्मे करम है अब्बास[अ०]
आसमां पर जो मेरा जाहो-हशम है अब्बास[अ०]

तू न होता तो जहां में न वफ़ाएं होतीं
ब-ख़ुदा तू ही वफ़ाओं का भरम है अब्बास[अ०]

इसलिए उम्मे बनीं तुझ पे बहुत नाज़ां है
सर तेरा मरज़ी-ए-शब्बीर पे ख़म है अब्बास[अ०]

तुझको मासूमा-ए-आलम[अ०] ने पिसर अपना कहा
अल्लाह-अल्लाह यह तेरा जाहो-हशम है अब्बास[अ०]

सर निगूं हो गए दुनिया के निशां जितने थे
आज भी तेरा बुलंदी पे अलम है अब्बास[अ०]

तू भी बिगड़ी हुई तक़दीर बना देता है
तेरे हाथों में भी एक लौहो-क़लम है अब्बास[अ०]

तुझको मनसब दिया सरवर ने अलमदारी का
सबसे ऊँचा तेरा दुनिया में अलम है अब्बास[अ०]

अपने ज़ैग़म को भी परवाज़े तख़य्युल हो अता
आपको दस्ते बुरीदा की क़सम है अब्बास[अ०]

■ ज़ैग़म बाराबंकवी

वीमेन राइट्स

■ मौलाना अख़्तर अब्बास

औरतों को ख़ुदा ने ज़ाहिरी ख़ूबसूरती अपनी हिकमत की वजह से दी थी लेकिन हर ज़माने में मर्द औरतों के इसी ज़ाहिरी हुस्न की तरफ़ ध्यान देते रहे और उनके अंदर छिपी उनकी नेचुरल व रूहानी सलाहियतों की तरफ़ ध्यान नहीं दे सके। मर्द हमेशा इस हक़ीक़त से मुंह मोड़ते रहे कि औरत इंसान की सबसे बड़ी मुरब्बी है। वह चाहे तो इंसानी वेल्यूज़ को अपने अंदर पैदा करके सारे इंसानों के लिए आईडियल बन जाए, जैसा कि क़ुरआन ने हज़रत मरयम और हज़रत आसिया को क़यामत तक के सारे इंसानों के लिए ज़िंदगी का एक ख़ूबसूरत आईडियल बनाकर पेश किया है।

इलाही आईडियल

"अल्लाह ने ईमान वालों के लिए फ़िरऔन की बीवी (आसिया) की मिसाल दी है कि उसने दुआ कि ऐ परवरदिगार! मेरे लिए जन्नत में अपने क़रीब एक घर बना दे और मुझे फिरऔन और उसके अमल से नजात दिला दे और मुझे उस ज़ालिम क़ौम से निजात दे। मरयम बिन्ते इमरान की मिसाल दी है जिसने अपनी इफ़्फ़त की हिफ़ाज़त की तो हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी और उसने अपने रब के कलिमात और किताबों की तसदीक़ की और वह हमारे फरमाबरदार बंदों में थी।[1]

इसी तरह हज़रत ज़ेहरा अपने ईमान व अमल की वजह से अपनी कम उम्र के बावजूद पूरी इंसानियत के लिए एक बेमिसाल आईडियल बन गईं।

ख़ुद पर ज़ुल्म

यह अज़ीम आईडियल्स मौजूद हैं लेकिन आम तौर पर मर्दों के साथ औरतों ने ख़ुद भी अपने ऊपर ज़ुल्म किया और अपने हक़ों के पामाल होने की वजह बनीं क्योंकि उन्होंने ज़ाहिरी हुस्न व जमाल से हटकर अपनी असली शख़्सियत को पहचनवाने में भरपूर रोल नहीं अदा किया और वह अपने आपको उसी शक्ल में ढालती गईं और उसी रंग में बदलती गईं जिसके लिए उनसे कहा जाता रहा।

इस्लाम आने से पहले सिर्फ़ थोड़ा सा ही टाइम ऐसा गुज़रा था जिसमें औरतों के राईट्स और उनके एहतेराम का बहुत थोड़ा सा ख़्याल रखा गया था और वह मिडिल एजेज़ के बीच का ज़माना था और वह एहतेराम भी हज़रत मरयम के एहतेराम की वजह से था क्योंकि ईसाईयत का एक अहम पिलर हज़रत मरयम[अ०] थीं लेकिन औरतों के एहतेराम का यह सिलसिला चौदवीं सदी से आगे नहीं बढ़ सका। फिर यूरोप में सियासी व फ़ाइनेंशल स्ट्रक्चर की तबदीली के साथ-साथ औरतों की शख़्सियत व इज़्ज़त भी ख़तरे में पड़ती गई। ख़ास कर फ़ाईनेंशल ढांचे ने औरतों को एक बिकने वाले सामान की हद तक नीचे गिरा दिया। इस बीच उन्नीसवीं सदी के शुरू में ज़ाहिरी तौर पर औरतों के राईट्स का बचाव करने के लिए फ़ेमिनिज़्म के नाम से एक तहरीक शुरू की गई जिसने एक तरफ़ अगर औरतों के कुछ राईट्स का बचाव किया तो दूसरी तरफ़ आज़ादी, बराबरी और वीमेन राईट्स जैसे ख़ूबसूरत नारों की मदद से औरतों की पाकीज़गी, शराफ़त, हैसियत और इज़्ज़त को इस तरह बर्बाद किया कि उसके सामने पुराने ज़माने में हिन्दी, ईरानी, रूमी, यूनानी, चीनी, मिस्री व अरबी कल्चर्स में औरतों पर होने वाले ज़ुल्म भी हलके पड़ गए।

आने वाले दौर में जब दीनी तालीमात और इस्लामी कल्चर के साये में औरतों को उनका सही और बाइज़्ज़त मक़ाम हासिल होगा तो आज के दौर को इन्सानी हिस्ट्री के शर्मनाक दौर के नाम से याद किया जाएगा।

इस्लाम का रोल

इस्लाम से पहले औरतों के बारे में नबियों की तालीमात को पूरी तरह भुला दिया गया था। हर बड़ी क़ौम और कल्चर किसी न किसी तरह औरतों पर ज़ुल्म ढा रहा था। पहली बार इस्लाम ने औरत को इन्सानी ज़िंदगी का एक अहम हिस्सा बनाया और समाजी, अख़्लाक़ी व क़ानूनी ऐतबार से औरतों के सही मुक़ाम से दुनिया को पहचनवाया। इस्लाम ने बताया कि बुलंद इन्सानी वेल्यूज़ को हासिल करने में मर्द व औरत के बीच कोई फ़र्क़ नहीं है। औरतें भी मर्दों की तरह ह्यूमेन सोसाइटी का एक हिस्सा हैं।

ख़ुदा औरतों की एक जैसी ख़िलक़त का ज़िक्र करते हुए क़ुरआने मजीद में फ़रमाता है, "ऐ इन्सानो! उस परवरदिगार से डरो जिसने तुम सबको एक नफ़्स से पैदा किया

और उसका जोड़ा भी उसी की जिन्स से बनाया है और फिर उन दोनों से बहुत सारे मर्द और औरतें दुनियां में फैला दिए हैं।" [2]

रसूल अल्लाह[स०] के सामने आम तौर से सहाबियों की शक्ल में मर्द हुआ करते थे लेकिन जब क़ुरआनी आयतें नाज़िल होती थीं तो सारे इन्सानों को मुख़ातिब किया जाता था। क़ुरआन अगर सभी इन्सानों को कोई पैग़ाम देता है तो "या अय्युहन नास" कहकर यानी ऐ इन्सानो या ऐ लोगो जिसमें मर्द और औरत सब शामिल हैं और अगर मुसलमानों से बात करता है तो "या अय्युहल लज़ीना आमनू" कहकर यानी ऐ ईमान वालो। इसमें भी सारे मुसलमान मर्द और औरतें शामिल हैं।

इस्लाम की नज़र में

जब क़ुरआन अल्लाह के नज़दीक इन्सान की फ़ज़ीलत और उसका स्टेटस बताता है और यह बयान करता है कि इन्सानी फ़ज़ीलतों यानी ह्यूमन वेल्यूज़ में मर्द व औरत सब बराबर हैं तो इस तरह आयत नाज़िल होती है, "ऐ लोगो! मैंने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम को अलग-अलग गिरोहों व क़बीलों में क़रार दिया ताकि तुम पहचाने जाओ। बेशक अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़्यादा फ़ज़ीलत वाला इन्सान वह है जो सबसे ज़्यादा पाक व साहेबे तक़वा है।" [3]

इस्लाम में औरतों का एहतेराम इतना है कि क़ुरआन के तीसरे बड़े सूरे का नाम "सूरए निसा" यानी औरतों का सूरा रखा गया जिसकी बहुत सारी आयतों में औरतों के राईट्स बयान किए गए हैं। क़ुरआन से पहले किसी भी किताब में इस तरह औरतों के राईट्स नहीं बयान किए गए थे।

इन्सानी हिस्ट्री में पहली बार मर्दों के साथ-साथ औरतों से बैअत ली गई और इस्लामी कल्चर व इस्लामी सियासत में उन्हें बराबर का दर्जा दिया जबकि अभी चौदह सौ साल से ज़्यादा गुज़र जाने के बाद भी कुछ मुल्कों और अफ़सोस कि कुछ मुसलमान मुल्कों में औरतों को वोट देने का भी हक़ नहीं है।

रसूल अल्लाह के सामने जब हज़रत फ़ातिमा[अ०] आती थीं तो आप खड़े हो जाते थे। हज़रत ज़ेहरा का हाथ चूमते थे और अपनी जगह बिठाते थे। कितनी बार आपने हज़रत ज़ेहरा को एहतेराम व मुहब्बत में "उम्मे अबीहा" यानी अपने बाप की मां कहकर बुलाया था।

जब हज़रत अली[अ०] ने हज़रत ज़ेहरा का रिश्ता मांगा तो ऐसे रिश्ते के बावजूद रसूल अल्लाह ने फ़रमाया, "ठहरो! फ़ातिमा से इजाज़त ले लूँ"।

राईट्स की अदाएगी

इस्लाम ने मर्द व औरत दोनों के राईट्स को अदा करने पर बहुत ज़ोर दिया है और चूंकि औरतों के हक़ ज़्यादा पामाल होते हैं इसलिए मर्दों पर ज़्यादा ज़ोर दिया है। यहां कुछ मिसालें पेश की जा रही हैं:-

रसूल अल्लाह[स०] ने मर्द व औरत दोनों से फ़रमाया है, "मर्द और औरत में से जो भी एक दूसरे को तकलीफ और दुख पहुंचाएगा ख़ुदा न उसकी नमाज़ को क़ुबूल करेगा और न किसी दूसरे अच्छे अमल को।" [4]

इमाम मासूम[अ०] ने उस शख़्स को दो बार मलऊन मलऊन कहा है जो बीवियों के हक़ों को बर्बाद करे। [5]

रसूल अल्लाह[स०] ने फ़रमाया, "बीवियों का एहतेराम और उनसे मुहब्बत ईमान की निशानी है और उसके बाद फ़रमाया कि मैं तुम सबसे ज़्यादा अपनी बीवियों का एहतेराम करता हूं। [6]

यह भी फ़रमाया कि मोमिन इन्सान खाने में बीवी और बच्चों का ताबे होता है यानी जो उन्हें पसन्द होता है वही चीज़ खाता है न यह कि अपनी पसंद का खाना उन्हें खिलाए।

औरतों के बारे में इस्लाम के बहुत सारे बुनियादी उसूल हैं जो बाद में आने वाले इशूज़ में पेश किए जाएंगे। अगर इन उसूलों की तरफ़ बेहतर तरीक़े से ध्यान किया जाए तो औरत न घर-घर में मौजूद डिक्टेटरों के जुल्म का शिकार होगी न घर के बाहर वीमेन राइट्स और आज़ादी के नाम पर धोखा देने वाले हवस बाज़ों के जुल्म का निशाना बनेगी और वह ख़ुद अपने आपको और अपने वक़ार और पाकीज़गी को भी बेहतर तरीक़े से पहचान लेगी।

1-सूरए तहरीम/11-12, 2-सूरए निसा/1, 3- सूरए हुजरात/13, 4-वसाएलुश शिया, 14/116, 5-वसाएलुश शिया, 14/122, 6-वसाएलुश शिया, 14/122

Men of quality respect women's equality

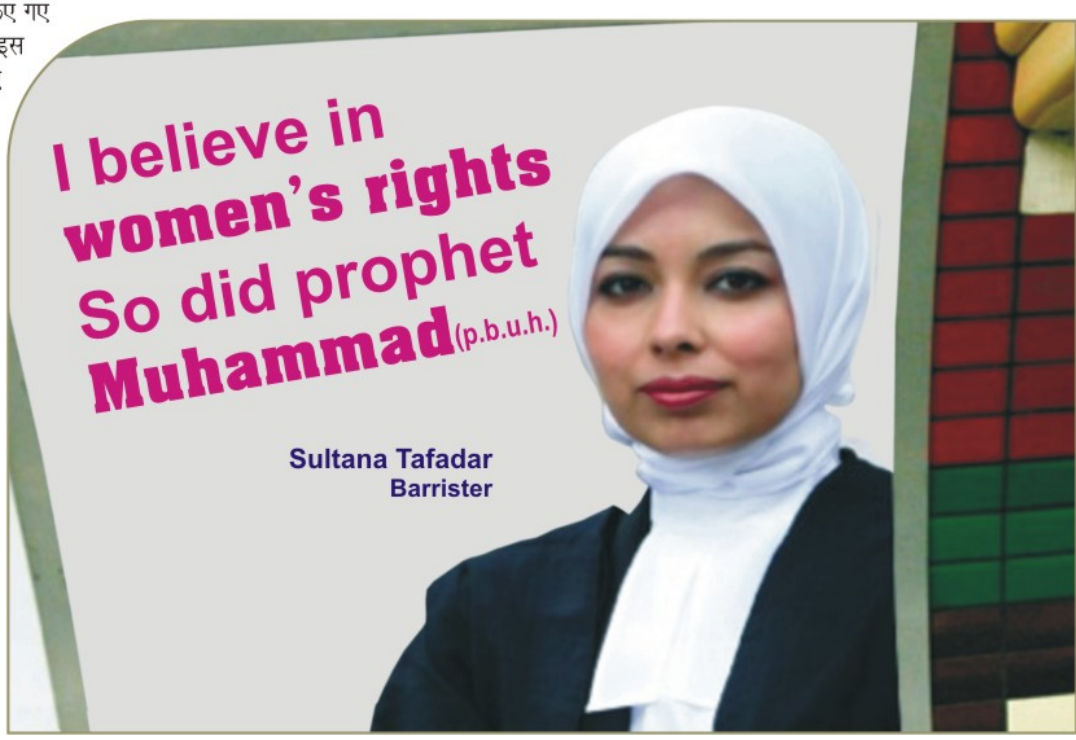

पैदाईश से पहले और उसके बाद

■ इंजीनियर सै. हसन रज़ा नक़वी

हर इल्म की कहीं न कहीं से शरूआत होती है। साथ ही इल्म और तरबियत का चोली दामन का साथ है। नेचर को बनाने वाले के क़ानून के मुताबिक़ बच्चे की तरबियत की शरूआत मां के पेट में आने के वक़्त से हो जाती है। इस दौर में मां का सबसे अहम रोल होता है। मां की ग़िज़ा, मां की सोच और मां की बातचीत, यह तीनों जिस्म, दिमाग़, रूह और मौरल डेवलप्मेंट के लिए पैदाईश से पहले बच्चे को तैयार कर देते हैं। इस बारे में मासूमीन[अ०] की हदीसें भी मौजूद हैं।

कुछ चीज़े जीन में ट्रांस्फ़र होती हैं। जिन पर हमारा कोई क़ाबू नहीं है और कुछ चीज़ें हम ख़ुद बच्चों में बोते हैं। इनकी जड़ें प्रेग्नेंसी के दौरान ही तैयार हो चुकी होती हैं।

हम लोगों पर पश्चिमी कल्चर का काफ़ी असर है और काफ़ी हद तक हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी इससे चलती भी रहती है। जैसे इस बारे में प्रेग्नेंसी के दौरान म्यूज़िक सुनने को डॉक्टर अक्सर कहते हैं जबकि कान के ज़रिए उतना ही नुक़सानदेह है जितना कि नाक के ज़रिए धुआं। मगर क्योंकि धुआं ख़ुद को बुरा लगता है, इसलिए आदमी ख़ुद को बचा लेता है मगर म्यूज़िक का नुक़सान नज़र नहीं आता। इस तरह इन औरतों से कहा जाता है कि ख़ूब घूमिए, फिरए ताकि दिमाग़ फ़्रेश रहे (सिवाए इसके के कोई कॉम्पलिकेशन न हो)। घूमने में मुलाक़ातें भी होंगी, इसलिए एहतियात यही करना है कि यह उसी हद तक रहे कि उस बच्चे को ख़राब न करदे जिसने अभी दुनिया देखी भी नहीं है। यह सब्जेक्ट एक डिटेल्ड आर्टिकिल चाहता है।

पैदाईश के बाद यह ज़िम्मेदारियां और अहम हो जाती हैं। अब वालिद साहब इस तालीमो-तरबियत में शामिल हो जाते हैं और घर के बाक़ी लोग भी। बच्चे के सामने रहने वालों का मिज़ाज, मां की ग़िज़ाएं, बच्चे के सामने की जाने वाली बातें वग़ैरा...वह ख़ुद बोलता नहीं है तो हम समझते हैं कि वह समझता भी नहीं है। जबकि तीन महीने की उम्र तक बच्चा इतना सीख चुका होता है जितना वह बाद के कई बर्सों में सीखता है।

एक और अहम बात यह है कि बच्चे की ग़िज़ा हमारे यहां "बोतल" से फ़ीड कराना फ़ैशन बन चुका है और दूसरे सारे जानदारों में अकेले हम ही यह करते हैं। कुत्ते और बिल्ली सभी अपने बच्चे की पहली ग़िज़ा मां का दूध समझते हैं और एक साथ कई-कई बच्चे पाल लेते हैं मगर हम कभी गाए, कभी बकरी और कभी डिब्बे पर भरोसा करते हैं। जबकि आज डाक्टर भी कहते हैं कि मां के दूध पर पला हुआ बच्चा दूसरे बच्चों से ज़्यादा सेहतमंद, समझदार और हर लिहाज़ से अच्छा होता है। यह बात इसलिए ज़रूरी है कि सही दिल, दिमाग़ व सेहत के बिना कोई बच्चा अच्छा स्टूडेंट या प्लेयर नहीं बन सकता।

तीसरा दौर आता है जब बच्चा समझने के साथ-साथ बोलना शुरू करता है और यह बड़ा नाज़ुक दौर है। उसको हर वक़्त पैरेंट्स की नज़रों के सामने होना चाहिए न कि प्ले-स्कूल में। साफ़ सी बात है कि दो लोग मिलकर भी मां-बाप एक बच्चे को नहीं संभाल सकते और वहां भेज रहे हैं जहां चार लोग चालीस बच्चों को संभालने का दावा करते हैं!

यह कैसे हो सकता है कि यह इतना ख़ास दौर होता है, बच्चे की हर बात में एक सवाल होता है, वही उसकी जानकारियां बढ़ाता है। नर्मी से जवाब देना, सही जवाब देना, उसके सामने आने वाली चीज़ों को पहचनवाना, उसे ज़बरदस्ती पढ़ाना नहीं बल्कि जो कुछ उसे पढ़ाना है वह ख़ुद पढ़ते रहिए वह सुन-सुन कर याद कर लेगा। सामने शार्प कलर रखना, दुआएं, अच्छी पोयम, ख़ूबसूरत पिक्चर्स, अच्छी फ़िज़ा और माहौल में ले जाना, नेचर का हुस्न दिखाना वग़ैरा बहुत क़ीमती असर डालते हैं और बच्चा जितना ज़्यादा वक़्त पैरेंट्स के साथ बिताता है उतना ही ज़्यादा कांफ़िडेंट निकलता है और हर इल्म, स्किल या हुनर को कांफ़िडेंस ही आख़िरी मंज़िल तक पहुंचाता है।

इन्सानियत को बचाने वाला

इमाम हुसैन[अ०] की विलादत पर मुबारकबाद के साथ ख़ास आर्टिकिल

■ हुज्जतुल इस्लाम जवाद नक़वी

इन्सानियत को हर ज़माने में ख़तरों का सामना करना पड़ता रहा है। फ़िरऔनियत से छुटकारा मिलने के बाद जाहिलियत के ज़माने में एक बार फिर इन्सानी नस्ल मिट जाने के कगार पर थी। जब ज़ुल्म के साये हर तरफ़ छा गए तो अल्लाह तआला ने अपने आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०] को भेजा। आपने लोगों को अंधेरों से निकाल कर नूरे हिदायत की तरफ़ बुलाया और एक नई ज़िंदगी की दावत दी, "ऐ ईमान वालो! जब अल्लाह और रसूल तुम्हें उन चीज़ों की तरफ़ बुलाएं जो तुम्हारे लिए ज़िन्दगी का ज़रिया हैं तो उनकी आवाज़ पर लब्बैक कहो।"

इस्लाम जैसे नई ज़िंदगी देने वाले दीन के आने के बाद लोगों ने निजात पाई। ज़िन्दा दफ़्न होने वाली लड़कियों ने ज़िंदगी पाई लेकिन आधी सदी गुज़रने के बाद फ़िरऔनी सिस्टम फिर से शुरू हो गया, बेग़ैरती फिर आम हो गई, फिर लड़कियों के अन्दर से शर्म और हया ख़त्म होना शुरू हो गई, उनकी रूह को मार डालना फिर से शुरू हो गया और लड़कियों की इज़्ज़त से खेलना फिर आम हो गया।

यज़ीदियत उसी फ़िरऔनी सोच का नया रूप थी। जो कुछ उस वक़्त हो रहा था वही आज भी हो रहा है। इसलिए अब मूसा[अ०] के वारिस, इमाम हुसैन[अ०] मैदान में आए। इस वारिसे मूसा[अ०] यानी इमाम हुसैन को बहुत ही ज़्यादा पाकीज़ा ख़ातून ने जन्म दिया था। मूसा[अ०] की मां बड़ी इज़्ज़तदार औरत थीं लेकिन वारिसे मूसा[अ०] की मां के बराबर मुक़ाम वाली नहीं थीं। सारी औरतों की सरदार, जनाबे फ़ातिमा[स०] जैसी औरत ने इमाम हुसैन[अ०] को जन्म दिया था। इसलिए अब इमाम हुसैन[अ०] आए। फ़िरऔनियत और यज़ीदियत को ललकारा और लोगों से कहा कि अब तुम्हें निजात देने की मेरी बारी है लेकिन फ़िरऔन के ज़माने में फ़िरऔनी सोच और फ़िरऔनी कल्चर की शुरूआत थी लेकिन यज़ीद के ज़माने में फ़िरऔनी सोच अपनी आख़िरी मंज़िल पर थी। इसलिए हज़रत मूसा[अ०] ने उस वक़्त के हिसाब से बड़ी-बड़ी मुसीबतें बर्दाशत कीं...

एक आम तसव्वुर के मुताबिक़ जब भी किसी के ज़ेहन में किसी नबी का तसव्वुर पैदा होता है तो फ़ौरन उसके ज़ेहन में किसी दीनी रहनुमा की तस्वीर आ जाती है। हमारे नबी[अ०] इस तरह नहीं थे। उनका काम सिर्फ़ नमाज़ें पढ़ाना नहीं था, सिर्फ़ निकाह व नमाज़े जनाज़ा पढ़ाना नहीं था बल्कि नबियों[अ०] को मुसीबतें भी उठाना पड़ती थीं। हज़रत मूसा[अ०] ने दरबदरी और जिलावतनी काटी, एक बूढ़े नबी की भेड़ें भी चरानी पड़ीं, ज़ालिमों से कुछ वक़्त तक के लिए छुपे भी रहे, फ़िरऔन से जंग भी की, दरयाओं में भी कूदना पड़ा। यह सारे काम खुदा के नबी मूसा[अ०] ने इन्सानियत की निजात के लिए अंजाम दिए ले कि न

फिर भी जो कुछ किया वह इमाम हुसैन[अ०] से ज़्यादा नहीं किया क्योंकि फ़िरऔन ने जो तबाही मचाई थी वह यज़ीद और बनी उमैय्या की तबाही से ज़्यादा नहीं थी। यज़ीद और बनी उमैय्या ने ऐसी तबाही मचाई थी, माहौल को ऐसा शिर्क से भर दिया था कि जिससे सारे नबियों[अ०] की ज़हमतें और कारनामे बर्बाद हो रहे थे।

मगर इमाम हुसैन[अ०] ने उससे बड़े समन्दर में छलांग लगाई, उससे बड़ी दरबदरी बर्दाश्त की बल्कि वह सारी मुसीबतें जो हर नबी ने अलग-अलग बदाश्त कीं इमाम हुसैन[अ०] ने सिर्फ़ अकेले एक साथ बदाश्त कीं। हज़रत मूसा[अ०] जब फ़िरऔन से जंग करने के लिए निकले थे तो ख़ुदावन्दे आलम ने उन्हें हुक्म दिया था, "ऐ मूसा! फ़िरऔन की तरफ़ जाओ उसने सरकशी मचा रखी है।" (1)

जनाबे मूसा[अ०] सिर्फ़ एक बीवी को अपने साथ लेकर निकले, रास्ते में जाते हुए दोनों को भूख और प्यास लगी, हज़रत मूसा[अ०] ने देखा कि दूर कहीं आग दिख रही है। अपनी बीवी से कहा कि तुम यहां रुको। मैंने आग देखी है, वहां शायद कुछ आग मिल जाए ताकि हम अपने लिए कुछ खाने पीने का इंतेज़ाम कर सकें। हज़रत मूसा[अ०] उसी आग की रौशनी में वहां गए। जब पास पहुंचे तो आवाज़ आई, "ऐ मूसा! यह आग नहीं है। बेशक मैं आलमीन का रब हूं।" (2)

इमाम हुसैन[अ०] ने जब उम्मत की बर्बादी को देखा, जब क़ौम के लड़कों को तबाह होते हुए देखा, क़ौम की लड़कियों और उनकी ग़ैरत से यज़ीदियों को खेलते हुए देखा तो अपनी औरतों और जनाबे रबाब[अ०] से यह नहीं कहा कि तुम यहां बैठो, मैंने करबला में आग देखी है, शायद कुछ आग मिल जाए ताकि हम खाने-पीने का कुछ इंतिज़ाम कर सकें बल्कि जनाबे रबाब[अ०] से कहा कि तुम भी इस आग में मेरे साथ चलो।

इसी तरह हज़रत मूसा[अ०] ने फ़िरऔनियत से निपटने के लिए निजात का जो कारवां बनाया था उसमें सारे मर्द रखे थे लेकिन इमाम हुसैन[अ०] ने जब देखा कि उनके ज़माने के फ़िरऔन ने सब कुछ तबाह कर दिया है, इतनी बेहयाई और बेग़ैरती फैला दी है कि रसूल[स०] का नवासा जंगलों में है, दीन ख़तरे में है और उन बेहयाओं और बेग़ैरतों को ग़ैरत नहीं आई तो ऐसा कारवां बनाया जिसमें औरतों ने भी बड़ा रोल अदा किया। जनाबे रबाब[अ०] अगरचे बड़ी बाअज़मत औरत हैं लेकिन हज़रत फ़ातिमा[अ०] की गोद की पली हुई नहीं हैं। इस बर्बादी और तबाही से उम्मत को वही औरत निजात दे सकती है जो मूसा[अ०] की मां से बेहतर मां की गोद में पली हूं। इसलिए हज़रत ज़ैनब[अ०] और हज़रत उम्मे कुलसूम[अ०] को भी साथ लिया। नबी की बेटियों वाला कारवां बनाकर करबला आए और फ़िरऔन को ललकारा कि जब मैं मूसा का वारिस हूं तो किसी की जुरअत नहीं हो सकती कि दीने इस्लाम को मिटा सके। हालांकि लोगों ने आपसे सवाल भी किया कि आप जब जा रहे हैं तो औरतों को क्यों ले जा रहे हैं? इमाम हुसैन[अ०] सबके जवाब में यही कह रहे थे, "क्या तुम नहीं देखते कि हक़ पर अमल नहीं हो रहा और बातिल से रोका नहीं जा रहा ताकि मोमिन अपने रब से मुलाक़ात का शौक़ पैदा कर सकें।" (3)

क्या तुम नहीं देखते कि इन्सानी नस्ल तबाह हो रही है, इंसानी नस्ल को निजात देना है जो इन बीबियों के बिना हो ही नहीं सकता। मैं यह हया के पैकर, हया के मुजस्समे साथ लेकर जा रहा हू और बेहयाओं को बता रहा हूं कि देखो हज़रत फ़ातिमा[अ०] की गोद के पले हुए हया के मुजस्समे इसलिए बाज़ारों और दरबारों में आए हैं ताकि तुम्हें हया और पर्दे का कुछ तो ख़याल आ जाए, तुम्हें ग़ैरत और ज़िन्दगी जीना आ जाए, इंसानी नस्ल को बचाने की तुम्हें कुछ तो फ़िक्र हो। अफ़सोस कि उन बेवफ़ाओं ने इमाम हुसैन[अ०] के साथ वही किया जो मूसा[अ०] की उम्मत ने हज़रत मूसा[अ०] के साथ किया था। मूसा[अ०] ने अपनी उम्मत में आकर ऐलान किया कि ख़ुदा की तरफ़ से यह हुक्म आया है कि जाओ अपने मुक़द्दसात को बचाओ, अपने मुक़द्दस मक़ामात को ज़ालिमों से आज़ाद कराओ तो उम्मत ने कहा कि ऐ मूसा[अ०]! तुम और तुम्हारा ख़ुदा दोनों मिल कर जाओ, दुश्मनों से लड़ो, हम यहां दरियाए नील के

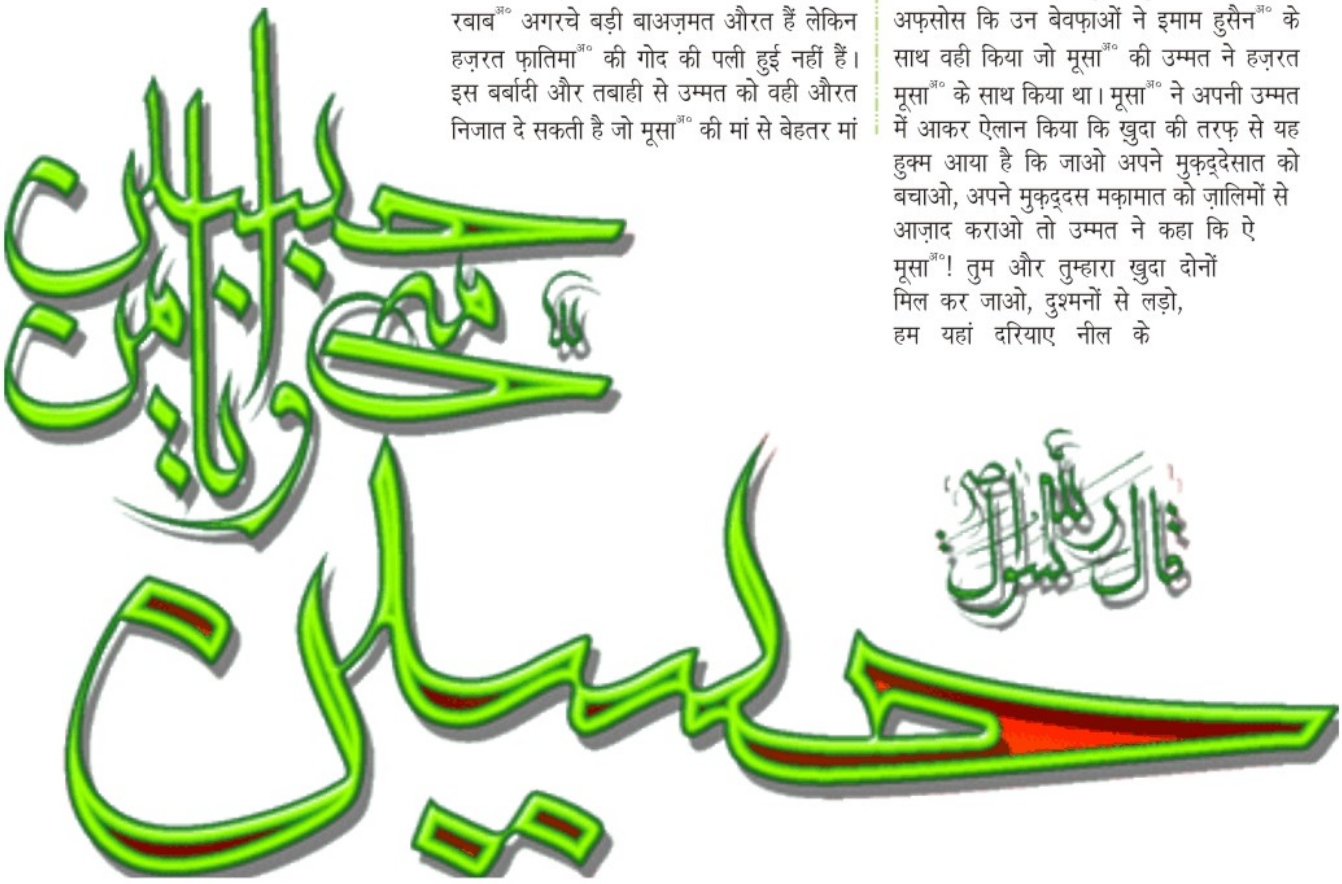

किनारे इन पेड़ों के साए में बैठे हैं। जब तुम जीत जाओगे और माले ग़नीमत लेकर वापस आओगे तो हम यहां तुम्हारा इंतिज़ार कर रहे होंगे।

इसलिए इमाम हुसैन[अ०] ने फ़िरऔनयित के ख़िलाफ़ अकेले लड़ना मीरास में पाया था। उम्मत ने साथ देना छोड़ दिया जैसा कि मूसा[अ०] की उम्मत ने साथ देना छोड़ दिया था। हुसैन[अ०] की उम्मत ने ख़ुद इमाम हुसैन[अ०] से मीरास लेने के बजाए मूसा[अ०] की उम्मत से मीरास ली। वह उम्मत भी इंतिज़ार में थी और यह उम्मत भी। इमाम हुसैन[अ०] को न जाने कितने ख़त लिखे गए यानी ख़त लिखकर हुसैन[अ०] का इंतिज़ार किया जाता रहा। ख़तों में यही लिखा था कि ऐ हुज्जते ख़ुदा! जितना जल्द हो सके आ जाइए! हम आपकी मदद के लिए तैयार हैं लेकिन जब आए तो उन बेवफ़ाओं ने मूसा[अ०] के वारिस इमाम हुसैन[अ०]को अकेला छोड़ दिया। इसीलिए हम जब ज़ियारते वारिसा पढ़ते हैं तो यह भी कहते हैं कि ऐ वारिसे मूसा।

हमें हुसैन[अ०] का वारिस बनना है न कि बनी इस्राईल का वारिस। कूफ़े के लोग बनी इस्राईल के वारिस थे। सिर्फ़ इंतेज़ार करने वाली क़ौमें बनी इस्राईल की वारिस बन जाती हैं। इसलिए हमें कूफ़ी और शामी नहीं बनना है बल्कि सिर्फ़ और सिर्फ़ वारिसे हुसैन बनना है।

1-अन्नाज़िआत/17, 2-अलक़सस/30, 3-मोसूअतु कलिमात अल-इमाम अल-हुसैन[अ०] / 356

भोलू और भाला

भोलू और भाला पानी के दो ड्राप्स थे। दोनों में गहरी दोस्ती थी। वह नीले समंदर में रहते थे। एक दिन लाल रंग की मछली आई। भाला उसके बनाए हुए बुलबुले में फ़ंस कर रह गया।

''भोलू! मुझे बचाओ!'' भाला चिल्लाया।

मगर बुलबुला उसको लेकर आसमान की तरफ़ उड़ गया। तेज़ हवाएं भाला को समंदर से दूर ले गईं। भाला ने हवा से पूछा, ''क्या तुम भोलू के पास ले जा सकती हो ?''

''मैं नहीं जानती भोलू कहां है ?मैं तुम को बादलों तक ले जाती हूं। शायद वह तुम्हारी मदद कर सकें।'' हवा ने जवाब दिया। बादलों से भाला ने पूछा, ''क्या तुमने मेरे दोस्त को देखा है ?''

''हम नहीं जानते तुम्हारा दोस्त कहां है ?शायद पहाड़ को पता हो।'' बादलों ने जवाब दिया।

बादल भाला को पहाड़ के पास छोड़ गए। भाला ने पहाड़ से पूछा, ''पहाड़! मुझे अपने दोस्त भोलू के पास जाना है।''

''तुम दरिया से जा मिलो। वहां कोई न कोई तुम्हारी मदद ज़रूर करेगा।'' पहाड़ बोला।

दरिया में भाला की मुलाक़ात एक बूढ़े कछुए से हुई। भाला की कहानी सुन कर कछुआ बोला, ''बेटा! मेरी पीठ पर चढ़ जाओ। मैं तुम्हारे दोस्त के पास ले चलता हूं!''

समंदर के पास पहुंच कर भाला लहरों में उतर गया। कुछ ही देर बाद भाला ने भोलू का देख लिया। दोनों ख़ुशी से उछल पड़े और आगे बढ़ कर गले लग गए। फिर भाला ने अपने दोस्त को सफ़र की कहानी सुनाई और बताया कि वह किस-किस की मदद से यहां तक पहुंचा है।

पानी

अगर हम यह पूछें कि खाने-पीने की चीज़ों में से सबसे ज़्यादा ज़रूरी चीज़ क्या है जिसके न होने से या कमी से इंसान मौत के मूंह में भी जा सकता है तो ज़रूर इसका जवाब 'पानी' के सिवा और कुछ नहीं हो सकता। चाहे हम इसकी इम्पोर्टेंस पर ज़्यादा ध्यान न देते हों बल्कि कभी-कभी तो इसे ग़िज़ाई चीज़ों में भी शामिल नहीं किया जाता लेकिन फिर भी यह बात दावे के साथ कही जा सकती है कि इंसान हफ़्तों या महीनों बग़ैर विटामिन के गुज़ार सकता है लेकिन पानी के बग़ैर एक दिन भी गुज़ारना मुश्किल है। हां, लेकिन कुछ वक़्त के लिए हड्डियों में मौजूद पानी से इंसान फ़ायदा उठा सकता है।

अगर एक इंसान की बॉडी का वेट 65 किलोग्राम है तो उसमें 40 लीटर या लगभग दो तिहाई हिस्सा पानी शामिल होता है। पैदाइश के वक़्त बदन में 75% पानी होता है जो कि साठ साल की उम्र तक 50% हो जाता है। बदन के हर हिस्से में भी पानी की मिक़दार अलग-अलग होती है। यानी अज़लात में 72%, चर्बी में 20 से 30% और हड्डियों में 25% पानी मौजूद होता है। जिन लोगों के बदन में चर्बी ज़्यादा होती है या वह मोटे होते हैं उनमें पानी की मिक़दार सिर्फ़ 55% रह जाती है। मर्दों में चर्बी औरतों के मुक़ाबले में बहुत कम और पानी ज़्यादा होता है। उम्र के साथ-साथ इंसान के बदन में पानी की मिक़दार कम होती चली जाती है। इसलिए 60 साल के बाद मर्दों में यह मिक़दार 50 से 54% और औरतों में 42 से 49% रह जाती है।

अगरचे पानी देखने में एक बहुत ही सिम्पल सी चीज़ है और सिर्फ़ हाइड्रोजिन और ऑक्सीज़न से मिलकर बनता है लेकिन इसके काम इतने ज़्यादा ख़ास हैं कि कोई दूसरी चीज़ इसकी जगह नहीं ले सकती है। लाल और काली रगों में 3 से 5 लीटर लिक्वेड को कंट्रोल करने का काम पानी ही करता है। इसके अलावा यह बदन के टम्प्रेचर को भी कंट्रोल में रखता है।

लिक्विड का इस्तेमाल किस हद तक इंसान की ज़िंदगी और उसकी आदतों से जुड़ा हुआ है?

फेफड़े इंसान के अन्दर पानी की मिक़दार को कंट्रोल करने का काम पूरा करते हैं। इंसान के अंदर प्यास को महसूस करने की फ़ीलिंग असल में पानी की कमी का ऐलान है। पुराने ज़माने में इंसान का ख़्याल था कि जब गला ख़ुश्क हो जाए और मुंह सूख जाए तो इसका मतलब है कि इंसान को पानी की ज़रूरत है। ऐसा नहीं है। प्यास उस वक़्त लगती है या प्यास उस वक़्त महसूस होती है जब बदन में ख़ून गाढा हो जाता है जिसके पसीने या पेशाब के ज़रिए बॉडी का पानी निकलता है जिसके साथ ही नमकियात का इख़राज भी ज़रूर होता है। इसलिए ऐसे लोगों को जिन्हें पसीना बहुत ज़्यादा आता है उन्हें सलाह दी जाती है कि वह गर्मियों में नमक का इस्तेमाल बढ़ा दिया करें। ख़ास तौर पर यह कहना काफ़ी होगा कि ऐसे लोगों को दूसरे लिकवेड के अलावा रोज़ाना कम से कम 6 से 8 ग्लास पानी ज़रूर इस्तेमाल करना चाहिए।

अब सवाल यह पैदा होता है कि इंसान को कम से कम कितने पानी की रोज़ाना ज़रूरत होती है? इसका जवाब यह है कि हर इंसान में पानी की ज़रूरत उम्र और वज़न के हिसाब से अलग-अलग है। इंसान जितना जवान होगा पानी की ज़रूरत उतनी ही ज़्यादा होगी।

बड़ी उम्र के लोगों को अपने वज़न के हिसाब से हर एक किलोग्राम पर रोज़ाना एक मिली लीटर और बच्चों को पांच मिली लीटर पानी की ज़रूरत होती है। इसमें से दो तिहाई मिक़दार दूसरे लिकवेड वग़ैरा से हासिल की जा सकती है। नीचे के चार्ट की मदद से यह मालूम हो सकता है कि किस ग़िज़ा में पानी की कितनी मिक़दार शामिल है।

ग़िज़ा	पानी की मिक़दार (%)	ग़िज़ा	पानी की मिक़दार (%)	ग़िज़ा	पानी की मिक़दार (%)
शकर	बहुत ही कम	चिकन	71%	नारंगी	88%
सूखे मेवे	5%	भुट्टा	74%	चुक़ंदर	91%
मक्खन	16%	अंडा	74%	गाजर	91%
केक	32%	केला	76%	कद्दू	92%
रोटी	36%	आलू	80%	तरबूज़	93%
पनीर	40%	सेब	85%	सलाद	96%
गोश्त	60%	दूध	85%	अजवाईन	94%
मछली	68%	मूली	64%		

तरबियत

■ गुलज़ार फ़ातिमा

इस समाज में हर इंसान के लिए ख़ुदा ने एक ड्यूटी तय की है और वह यह है कि -

1- इंसान अपनी तरबियत करे यानी इंसान अपने अंदर उन सलाहियतों को पैदा करे जो उसे वाक़ई मानों में इंसान बना सकें।

2- इंसान अपने बच्चों की तरबियत करे।

जहां तक बच्चों की परवरिश का सवाल है तो यह बात सभी मानते हैं कि बच्चों की परवरिश हर मां-बाप का फ़र्ज़ है। और अगर ख़ुदा न करे किसी के मां-बाप न हों तो फिर उस बच्चे की ज़िम्मेदारी उसका फ़र्ज़ है जिसकी निगरानी में वह बच्चे हों। लेकिन ख़ुद अपनी तरबियत? यह बात आसानी से लोग हज़म नहीं कर पाते। जबकि इंसान को हमेशा तरबियत की ज़रूरत है चाहे वह ज़िंदगी के किसी भी मोड़ पर हो। यहां सबसे ख़ास बात यह है कि यह पता चलाया जाए कि तरबियत का मक़सद क्या है? और तरबियत व परवरिश में क्या फ़र्क़ है?

हर बच्चा जब इस दुनिया में क़दम रखता है तो उसके मां-बाप के ऊपर दो ख़ास ज़िम्मेदारियां अपने आप आ जाती हैं, एक तो उसका पालना-पोसना जिसे परवरिश भी कहते हैं और दूसरे उसे अच्छे और बुरे की पहचान कराना यानी जिस्मानी और रूहानी दोनों एतेबार से उसकी देखभाल करना। यह पैरेंट्स की ज़िम्मेदारियों में शामिल है। और तरबियत का मक़सद भी यही है कि एक ऐसे इंसान की परवरिश करना जो दीनदार भी हो, तक़वे वाला भी हो, कामयाब व ज़िम्मेदार इंसान भी हो और दूसरों का ख़्याल करने वाला भी हो वरना एक जानवर में और उसमें कोई फ़र्क़ नहीं। वह भी अपने फ़ायदे के लिहाज़ से अच्छी तरह ज़िंदगी जी लेते हैं, उन्हें शिकार करना आता है क्योंकि यह उनकी ज़रूरत है मगर वह ख़ुद से दूसरों को कोई फ़ायदा नहीं पहुंचा सकते। तरबियत का एक बहुत अहम मक़सद यह है कि इंसान को ख़ुदा के क़रीब ले जाने में उसकी मदद करे। कुछ पैरेंट्स की कमी यह है कि वह चाहते हैं कि उनका बच्चा एक बड़ा इंसान बने यानी दुनिया के एतेबार से या वह डाक्टर हो या इंजीनियर या इसी तरह की कोई जॉब जबकि उन्हें चाहिए कि वह दुनियावी लिहाज़ से बड़े इंसान बनाने के बजाए अच्छे और फ़ायदेमंद इंसान बनाने की कोशिश करें। बेशक अगर कोई इंसान डाक्टर बनता है तो इसके ज़रिए वह लोगों की मदद कर सकता है लेकिन अगर वही डाक्टर एक अच्छा इंसान न हो तो वह मरीज़ को अपने सामने दम तोड़ता हुआ देख सकता है मगर अपनी फ़ीस के बग़ैर उसे हाथ भी नहीं लगा सकता, इससे यह साबित होता है कि सोसाइटी में बड़े मुक़ाम और ओहदे पर होना लोगों के लिए उस वक़्त तक फ़ायदेमंद नहीं हो सकता जब तक कि वह बड़ा इंसान न हो। बीस उसूल ऐसे हैं कि अगर तरबियत में उनका ख्याल रखा जाए तो बेहतरीन इंसान समाज को दिए जा सकते हैं। यहां हम इन बीस उसूलों में से कुछ को पेश कर रहे हैं:-

पहला क़ानून
ख़ुद तरबियत करने वाले का अच्छा इंसान होना

पैरेंट्स और टीचर्स बच्चों की तरबियत में एक अहम रोल अदा करते हैं, और यही लोग बच्चों का आइडियल भी होते हैं। यानी जो कुछ वह करते हैं और जो भी कहते हैं बच्चा उस पर पूरा भरोसा करता है। इसलिए ज़रूरी है कि आइडियल्स (मां-बाप, टीचर्स) पहले ख़ुद को इस क़ाबिल बना लें कि वह इस बड़ी ज़िम्मेदारी को अच्छी तरह निभा सकें जैसे किसी वायरल बीमारी में आम तौर पर जो भी छुआछूत की बीमारी में फंसा होगा उस बीमारी में फंसे होने का ख़तरा सबसे ज़्यादा उन लोगों को होता है जो उसके आस-पास होते हैं और यही वजह है कि इस तरह की बीमारी में ख़ास एहतियात की ज़रूरत होती है। अगर किसी घर में बाप गुस्सावर, झगड़ालू और गाली-गलौज देने वाला हो, मां स्ट्रेस, थकी, वहमी, परेशान हो तो यह सब बिल्कुल छुआछूत की बीमारी की तरह असर रखता है यानी बच्चों पर इन चीज़ों का निगेटिव असर पड़ता है। हज़रत अली अ० नहजुल बलाग़ा में फ़रमाते हैं, "जिस पर भी तरबियत की

ज़िम्मेदारी हो, इससे पहले कि वह दूसरों की तरबियत करे, ख़ुद अपनी तरबियत करे।''

हिस्ट्री से दो मिसालें

1- एक आदमी रसूले अकरम[स०] के पास आया और अपनी बीवी के नमाज़ न पढ़ने की शिकायत की। रसूले खुदा[स०] ने उससे कहा, ''पहले अपनी बीवी को जन्नत की नेमतों के बारे में बताओ, खुदा के बारे में बताओ और उसे जन्नत की ख़ुशख़बरी दो।'' उसने कहा कि ऐ रसूले खुदा[स०] मैं यह सब कर चुका हूं लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। पैग़म्बर[स०] ने कहा, ''उसे खुदा के अज़ाब से डराओ और बताओ कि अगर एक रकअत नमाज़ जानबूझ कर उसने छोड़ दी तो उसका ठिकाना जहन्नम है।'' उसने कहा, ''ऐ रसूले खुदा[स०] मैं उसे खुदा के अज़ाब से भी डरा चुका हूं लेकिन उस पर कोई असर नहीं हुआ।'' हज़रत ने कहा, ''फिर क्या बात है कि तुम्हारी बीवी नमाज़ नहीं पढ़ती?'' उसने कहा, ''या रसूल अल्लाह[स०] वह मुझसे कहती है कि पहले तुम नमाज़ पढ़ो ताकि मैं भी नमाज़ पढ़ूं।'' यानी यह कि वह ख़ुद तो नमाज़ पढ़ता नहीं था लेकिन अपनी बीवी को नमाज़ के लिए मजबूर करता था।

2- एक बार एक औरत अपने बच्चे को लेकर रसूले खुदा[स०] के पास आई ताकि रसूले खुदा[स०] उस बच्चे को हद से ज़्यादा खजूर खाने से मना करें। रसूले खुदा[स०] ने उसे दूसरे दिन आने के लिए कहा। वह औरत दूसरे दिन आई, आपने उस बच्चे से कहा कि खजूर कम खाया करो। उस बच्चे की मां को बड़ी हैरानी हुई और उसने कहा, ''ऐ पैग़म्बर! इस बात को तो आप कल भी कह सकते थे?'' आपने जवाब दिया, ''जिस वक़्त यह बात मैं कहने वाला था उस वक़्त ख़ुद मेरे मुंह में खजूर थी।''

दो नतीजे

1- जिस पर भी किसी की तरबियत की ज़िम्मेदारी हो, चाहे वह मां-बाप हों या टीचर्स या भाई बहन उन्हें चाहिए कि पहले ख़ुद अमल करें। ख़ाली ज़बान से कहना काफ़ी नहीं है और पहले ख़ुद अच्छे इंसान बनें वरना उनकी किसी बात का कोई असर नहीं होगा।

2- अगर पैरेंट्स को इस बात का एहसास हो जाए कि बच्चा अब उनकी बातें नहीं सुनता तो उन्हें चाहिए कि वह देखें कि बच्चा किसकी बातों को मानता है और फिर उससे मदद लें।

आइडियल की बात और अमल में फ़र्क़ के नुक़सान

बातों के ज़रिए से लोगों को अच्छे काम की तरफ़ बुलाना उसी वक़्त फ़ायदेमंद है जब कहने वाला ख़ुद भी उन बातों का पाबंद हो। इमाम सादिक़[अ०] ने फ़रमाया है, ''लोगों को अपने अमल के ज़रिए रास्ता दिखाओ, ज़बान के ज़रिए से नहीं।''[1]

अगर इंसान की बातें उसके अमल के मुताबिक़ नहीं होंगी तो उसके नुक़सान बहुत ज़्यादा होंगे।

1- पैरेंट्स की बातों का उलटा असर होगा।

2- पैरेंट्स की किसी भी बात का कोई असर बच्चों पर नहीं होगा। जैसे सिग्रेट पीने वाला लोगों को सिग्रेट पीने से मना करे!

3- बच्चा उनसे नफ़रत करने लगेगा।

4- पैरेंट्स पर से भरोसा उठ जाएगा।

5- गुनाह करने की हिम्मत पैदा हो जाएगी।

6- इस तरह पैरेंटस अपने बच्चों को रियाकार बना देते हैं यानी बच्चों के दिल में कुछ होता है और ज़ुबान पर कुछ और।

1-सफ़ीनतुल बिहार, 2/278

रसूले इस्लामः

सदक़ा 70 बलाओं से बचाता है।

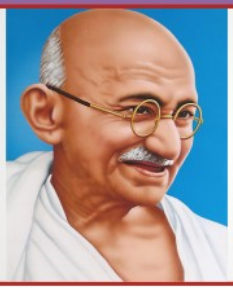

कामयाबी से सुकून नहीं मिलता। सुकून सिर्फ़ दिल से की गई कोशिशों से ही मिलता है। इसलिए दिल से की गई कोशिश ही सही मायने में कामयाबी यानी कम्पलीट जीत है–

महात्मा गांधी

बेशक आई आईटियंस कहलाना एक बहुत बड़े सपने का सच होना है। लेकिन, कामयाबी सदा हमारे क़दम चूमे यह ज़रूरी नहीं है। ज़िन्दगी में कॅरियर के किसी मोड़ पर अगर नाकामयाबी से मुलाक़ात हो जाए तो मायूस होने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि नाकामयाब होना ख़ात्मा नहीं बल्कि नए मक़सद को पाने के रास्ते में एक शुरूआत है। ज़रूरत है सिर्फ़ पॉज़िटिव नज़रिया बनाए रखने की। हिस्ट्री गवाह है कि बड़ी नाकामयाबियों के बाद दुनिया में कई ग्रेट साइंटिस्ट हुए हैं, जिनकी खोजें और तकनीक आज नई पीढ़ी के लिए आगे बढ़ने का एक सोर्स हैं। हमें भी इनसे सीख लेने की ज़रूरत है...

हार के आगे जीत है

कई बार मिली नाकामयाबी

जर्मन साइंटिस्ट अल्बर्ट आइंस्टीन को मैथमैटिक्स के अलावा कुछ नहीं आता था। इसलिए वह डिप्लोमा भी नहीं कर सके थे। काफ़ी दिनों के बाद उन्होंने पैटेंट ऑफ़िस में क्लर्क की नौकरी शुरू की। वहीं से वे अपना रिसर्च पेपर पब्लिश करते थे। कहा जाता है कि अपनी ज़िन्दगी की शुरूआत में वे बहुत नाकामयाब आदमी थे। कई बार उन्हें नाकामयाबी का ज़ायक़ा चखना पड़ा। लेकिन उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी। और जो करने की ठानी, उसे पूरा करके ही दम लिया। 1929 में फ़ोटो इलेक्ट्रिक इफ़ेक्ट की वजह से उन्हें नोबेल इनाम भी मिला।

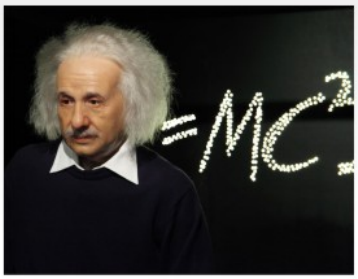

रास नहीं आती थी पढ़ाई

बांग्लादेश के खुलना ज़िले के रारूली कटीपाड़ा गांव में 1861 में प्रफुल्ल चंद्र राय पैदा हुए थे। राय बंगाली एकेडमिक में कैमिस्ट थे। इन्होंने कोई इंजीनियरिंग की डिग्री नहीं ली थी। बचपन से ही ये पढ़ाई से दूर भागते थे। घर वालों के दबाव के बाद भी इनका पढ़ने में मन बहुत कम ही लगता था। कभी-कभार ही स्कूल जाते थे। पढ़ने में यह औसत स्टूडेंट थे। हालांकि बाद में इन्होंने कोलकाता यूनिवर्सिटी से बी.एस.सी. और एम.एस.सी. की डिग्री ली और इंटरनेशनल लेविल पर फ़िज़िक्स के साइंटिस्ट हुए। इन्हें फ़िज़िक्स जगत में इज़्ज़त के साथ याद किया जाता है।

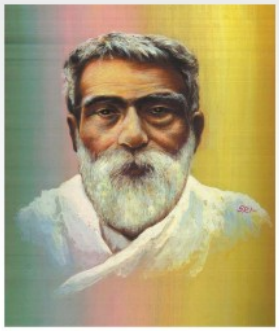

12वीं में लगातार दो बार हुए थे फ़ेल

तमिलनाडु के इरोड में पैदा हुए रामानुजन को दस साल की उम्र में ही मैथमैटिक्स का सामना करना पड़ा। वे लगातार दो साल 12वीं में फ़ेल हुए। लेकिन, मायूस नहीं हुए। चूंकि मैथमैटिक्स उनको अच्छी लगती थी इसलिए वह इसमें खो गए। मैथमैटिक्स से बेहद लगाव की वजह से वह दूसरे सब्जेक्ट्स पर बहुत कम टाइम दे पाते थे। रिज़ल्ट यह हुआ कि कई सब्जेक्ट्स में फ़ेल होते रहे। हालांकि उन्होंने 12 साल की उम्र ही में प्रमेय की खोज में महारत हासिल कर ली थी। उन्हें कैम्ब्रिज से फ़ेलो ऑफ़ रॉयल सोसाइटी मिला। इसके बाद वह अपने पसंदीदा सब्जेक्ट्स के साथ आगे बढ़े।

फिर भी हार नहीं मानी एडीसन ने

सिर्फ़ 14 साल की उम्र तक बेसिक एजुकेशन। आगे की पढ़ाई बिल्कुल नहीं। लेकिन, हौसले बुलंद। शायद इसी का नतीजा रहा है कि थॉमस एडीसन ने बल्ब की खोज की थी। बल्ब बनाते वक़्त भी इन्हें कई बार नाकामायाबी मिली। लेकिन, ये अपनी धुन में मस्त रहे। उन्होंने कहा था कि मुझे एक हज़ार ऐसे तरीक़े मालूम हैं, जिससे दुनिया में कभी भी कोई बल्ब नहीं बना सकता। आज के स्टूडेंट थॉमक अल्वा एडीसन से सीख ले सकते हैं कि फ़ेल होना अंत नहीं है, बल्कि एक नए मक़सद को हासिल करने की दिशा में एक शुरूआत है।

मंजुल भार्गव

इंडियन क़ौमियत रखने वाले के मंजुल भार्गव प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी में मैथमैटिक्स के प्रोफ़ेसर हैं। मंजुल ने 14 साल की उम्र में हाई स्कूल पास किया। 1992 में उन्होंने हार्वड यूनिवर्सिटी से बी.ए. किया। उन्होंने क्वार्टिक और क्वांटिक डिग्री समेत 14 नए गैस कम्पोजिशन क़ानून बनाए। साल 2001 में इन्होंने प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी से डॉक्टरेट की डिग्री ली। मैथ्स इनको अच्छी लगती थी। आज इनकी गिनती इंटरनेशनल लेविल के प्रोफ़ेसरों में होती है। रिसर्च के लिए इनको कई अवार्ड भी मिले हैं।

वेंकटरमन रामकृष्णन

बॉयलॉजी साइंटिस्ट वेंकटरमन रामकृष्णन 2009 को नोबेल इनाम दिया गया। ये इंग्लैंड के कैम्ब्रिज मॉलिक्यूलर बॉयलॉजी के एम.आर.सी. लेबोरेटरी में काम कर रहे हैं। तमिलनाडु के कुड्डालोर ज़िले में पैदा हुए वेंकटरमन का इंडियन इंस्टीटयूट ऑफ़ साइंस में दाख़िला नहीं हो पाया था। 2010 में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ साइंस में एक स्पीच के दौरान वैंकटरमन ने ख़ुद इस बात का खुलासा किया था। मगर बॉयलॉजी और केमेस्ट्री के लगाव ने इन्हें नोबेल विजेता बनाया।

सबीर भाटिया

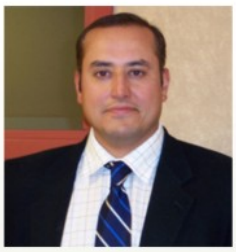

1969 में चंडीगढ़ में पैदा हुए सबीर भाटिया आई.आई.टी. के फ़ेल स्टूडेंट रहे हैं। ये बिट्स पिलानी गए और वहां से उन्हें कैलीफ़ोर्निया इंस्टीटयूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी भेजा गया। वहीं से इन्होंने ग्रेजुएशन किया। बाद में एप्पल कम्प्यूटर के लिए इन्होंने एक साल तक काम किया। 1995 सबीर एप्पल कम्प्यूटर में सहयोगी रहे। जैस स्मिथ के साथ मिलकर हॉटमेल की बुनियाद डाली। इस वक़्त यह हॉटमेल ई-मेल में काम कर रहे हैं। सबीर भाटिया आज सिलिकन वैली में जवानों के लिए आगे बढ़ने का एक सोर्स हैं।

एक रास्ता बंद हुआ तो दूसरी मंज़िल

सुना है आई.आई.टी. में नाकामयाब होने के बाद कई स्टूडेंट ख़ुदकुशी जैसा गंभीर कदम भी उठा लेते हैं। वह मान लेते हैं, दुनिया ख़त्म हो गई। पर यकीन कीजिए ऐसा बिल्कुल नहीं है। यह तो बस एक शुरूआत है। क्या सिर्फ़ एक एक्ज़ाम आपके फ़्युचर का फ़ैसला कर सकता है। यह तब तक नहीं हो सकता जब तक कि आप ख़ुद हार नहीं मान लेते। इसलिए निगेकिटव चीज़ों पर ध्यान देना बंद करके अपने अंदर छिपी खूबियों पर ध्यान देना शुरू कीजिए। यक़ीन मानिए यही सही वक़्त है।

पटना के कुमार सौरभ का आई.आई.टी. में लगातार दो बार सलेक्शन नहीं हुआ और उन्होंने एक प्राईवेट इंजीनियरिंग कॉलेज में दाख़िला लिया। अपने जुनून की बदौलत इंफोसिस, रोबोटिक्स 2009 में फ़र्स्ट पोज़ीशन हासिल की और आज वह ऐसे मैथमैटिकल एल्गोरिदम की बुनियाद डाल रहे हैं जो कि अपने आप में एक अनूठी ईजाद होगी।

दूसरी दुनिया दूसरे लोग

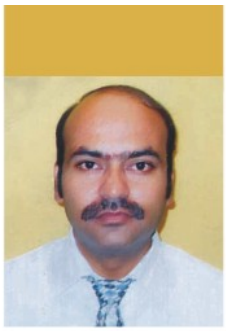

सै. आले हाशिम रिज़वी
यूनिटी मिशन स्कूल, लखनऊ

इस पूरे युनिवर्स में क्या हमारी ज़मीन पर रहने वालों के अलावा कहीं किसी दूसरी दुनिया में भी कुछ लोग रहते हैं? साइंस ने जिसे 'एलियन' का नाम दिया है, क्या सच में ऐसी कोई मख़लूक़ है?दरअसल इस तरह के सवाल अक्सर बहस में आते रहते हैं। कभी-कभी कुछ ऐसे वाक़ेए भी सामने आते हैं जो हमें दूसरी दुनिया और अंजान लोगों के बारे में सोचने पर मजबूर कर देते हैं। इसी अप्रेल के महीने में रूस के इरकुत्सक नाम के शहर में बर्फ़ के अंदर वहां के लोगों को दो फ़िट लम्बी एक ऐसी लाश मिली जिसकी बावट इंसानों से काफ़ी अलग थी और वह किसी जानवर जैसी भी नहीं थी। उस इलाक़े में लाश मिलने से दो महीने पहले यू. एफ़. ओ. यानी उड़नतश्तरी देखे जाने की भी ख़बर मिली थी।

अनआइडेंटिफ़ाइंग फ़्लाइंग आब्जेक्ट यानी चांदी सी चमकदार गोल-चपटी उड़नतश्तरियों के आसमान में अनोखी रफ़्तार के साथ उड़ते देखे जाने के क़िस्से अक्सर सुनने और पढ़ने को मिलते रहते हैं। इस पूरे युनिवर्स में लाखों-अरबों की तादाद में सितारे और प्लानेट हैं। शायद वहीं रहने वाले कुछ अंजान लोग कभी-कभी हमारी दुनिया की सैर करने ज़मीन पर आ जाते हैं। इस बात को साइंस पूरी तरह तो मानती लेकिन ऐसा हो सकता है, इससे साइंस पूरी तरह इंकार भी नहीं करती। दरअसल इस बारे में साइंस की रिसर्च अभी किसी ठोस नतीजे पर नहीं पहुंची है।

१ जूलाई १९६५ को फ़्रांस के वेलेसोल इलाक़े में अपे खेत की रखवाली करते हुए मॉरिस मास नाम के शख़्स ने सवेरे तड़के अंडे जैसी एक मशीन को आसमान से उतरते हुए देखा था। उसे छिप कर देखा कि वह मशीन जब ज़मीन के बिल्कुल पास आ गई तो रूक गई और उसमें से दो लोग उतरे जो क़द में नाटे, गंजे और बड़ी-बड़ी आंखों वाले थे। दोनों ने हरे रंग की पोशाक पह रखी थी। दोनों कुछ देर तक खेत की तहक़ीक़ करते रहे और फिर अपनी उड़ने वाली मशीन में बैठकर उड़ गए। इस तरह के सारे अजीबो-ग़रीब वाक़ेए आम लोगों के साथ-साथ साइंसटिस्टों को भी हैरान करते रहते हैं।

आइए! देखें कि जिस मामले में साइंस किसी नतीजे पर नहीं पहुंच पाई है उसमें इस्लाम का क्या नज़रिया है।

एक बार इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने अपे शार्गिद जाबिर बिन हय्यान को सितारों के बारे में बताते हुए फ़रमाया, "आसमान का हर सितारा एक दुनिया है और उ सब सितारों से एक बहुत बड़ी दुनिया पैदा होती है।"

इमाम के इस ख़ुलासे पर जाबिर को बहुत हैरानी हुई और उन्होंने पूछा, "क्या हमारी दुनिया की तरह दूसरी दुनिया में भी इंसान पाए जाते हैं?"

इमाम ने जवाब दिया, "इंसान के होने के बारे में तो मैं कुछ नहीं कह सकता लेकिन दूसरी दुनिया है और वहां मख़्लूक़ भी रहती है जिनसे हम अंजान हैं।" जाबिर ने इस पर पूछा, "इस बात के लिए आपके पास क्या दलील है?" इमाम ने कहा, "अल्लाह ने ख़ुद को क़ुरआने मजीद में आलम का नहीं बल्कि आलमीन यानी दुनियाओं का रब कहा है। यानी इस दुनिया के अलावा भी दूसरी दुनिया हैं। अल्लाह ने इंसान के ज़िक्र के साथ क़ुरआन में 'जिन' जैसी मख़्लूक़ का भी ज़िक्र किया है जिनसे हम अंजान हैं।"

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] और उनके शार्गिद जाबिर के बीच हुई इस बातचीत से जो नतीजा सामने आता है वह दूसरी दुनिया और एलियन्स की साइंस की थ्योरी को कन्फ़र्म करता है। हालांकि साइंस ख़ुद अभी इस मसले पर उलझी नज़र आती है। आसमानी दुनिया की गुत्थियां सुलझाने में साइंसदानों की रिसर्च लगातार चल रही हैं। अभी हाल ही में ज़मीन के पास चक्कर लगाते एक बहुत छोटे प्लेट की खोज हुई है। इस प्लेनेट को सूरज का एक चक्कर पूरा करने में ३६५ दिन, ६ घंटे लगते हैं। इसकी लम्बाई लगभग ४०० मीटर है।

इमाम अली[अ०] ने तो एक बार कहा भी था, "मैं ज़मीन के अलावा आसमी राज़ों को भी जानता हूं।" काश उस वक़्त आज के साइंसटिस्ट होते तो इमाम से आसमान और दूसरी दुनिया के बहुत से अनसुलझे राज़ों को जान लेते। लेकिन उस वक़्त के लोगों ने इमाम के इल्म से ज़्यादा फ़ाएदा नहीं उठाया और उनसे मामूली-मामूली से सवाल ही पूछते रहे।

मज़े की बात यह है कि सैकड़ों साल पहले मासूम इमामों ने जो कुछ बता दिया साइंस की माडर्न रिसर्च भी उसी के आस-पास भटक रही है।

हुज्जतुल इस्लरम जवाद मोहद्दसी

दिल की बात

ज़ुहूर की तमन्ना करने वालों और आपका इंतेज़ार करने वालों का सलाम हो आप पर ऐ मौला! ऐ महबूब! ऐ ज़ेहरा के बेटे! ऐ नुबुव्वत की भीनी-भीनी ख़ूशबू! ऐ ख़ुदा की हुज्जत!

अब फिर हम हैं और हमारा इंतेज़ार...

आंखों से आंसू जारी हैं और दिल इश्क़ व मोहब्बत से चूर, आपके आने का शौक़ दिलों को ज़िंदगी देने वाला और आपके दीदार का इश्क़ दिल की ठंडक है।

जिसने आपकी मोहब्बत की शराब से एक घूंट पी लिया उसकी रूह रौशन हो गई और जिसने आपकी किताबे विलायत से एक लफ़्ज़ भी पढ़ लिया वह हमेशा-हमेशा के लिए आपकी मुहब्बत पर बाक़ी रहा।

ऐ मेहदी! ऐ दूसरे मुहम्मद[अ]! ऐ हैदर के वारिस! ऐ हुसैन[अ] के ख़ून का बदला लेने वाले!

जब आप आएंगे तो परेशानियां दूर हो जाएंगी। शहरों और आबादियों में अमन व अमान फैल जाएगा। ज़ुल्म व सितम के महल वीरान हो जाएंगे। ख़ुदा का नूर और दीन की रौशनी सारी दुनिया में नज़र आएगी। कमज़ोर लोग ज़मीन पर हुकूमत करेंगे...

ऐ दीने मुहम्मदी के वारिस, ऐ वलिय्ये ख़ुदा!

अगर आप[अ] आ जाएं तो फिर परिंदे आपके दयार के अलावा किसी और दयार की तरफ़ कूच नहीं करेंगे...

अगर आप[अ] आ जाएं तो बुलबुलें पेड़ की डालियों पर बैठ कर अपनी ख़ूबसूरत आवाज़ में ख़ुशी के गीत गाएंगी...

अगर आप[अ] आ जाएं तो परिंदे आसमान में सैर करेंगे और तितलियां ख़ुशी से नाचा करेंगी...

अगर आप[अ] आ जाएं तो फूल खिल जाएंगे और पेड़ हरे-हरे कपड़ों में नज़र आएंगे...

अगर आप[अ] आ जाएं तो सब्ज़ क़बाएं आपके इस्तेक़्बाल के लिए आ जाएं और हर सुबह हर फूल आप[अ] का तवाफ़ करे। ऐ नरजिस के फूल! आ जाइए और आकर दुनिया को इंसाफ़ से भर दीजिए! मेहरबानी और मुहब्बत से भर दीजिए।

ऐ ज़ेहरा[अ] के फूल! आ जाइए और अपनी ज़िंदगी बख़्शने वाली आवाज़ से मुर्दा दिलों को ज़िंदगी बख़्श दीजिए। अपनी ला इलाहा इल्लल्लाह की दिल नशीं आवाज़ से सारी दुनिया को महका दीजिए!

हम जब से दुनिया में आए हैं, आपके आने के इंतेज़ार में हैं, आप[अ] के मुबारक क़दमों के इंतेज़ार में हैं, आप[अ] की अदालत के इंतिज़ार में हैं, ऐ सब्ज़ क़बा वाले मेहदी[अ]!

सलाम हो आप पर...

सलाम हो मेहदी[अ०] पर जो इंसानों की हिदायत करने वाले हैं!

सलाम हो बक़ियतुल्लाह पर जो नबियों की दावत की मीरास है!

सलाम हो अबा सालेह पर जो इंसानियत की निजात हैं!।

ऐ इमामत के चमकते सूरज जिसने ग़ैबत के बावजूद आशिक़ों के दिलों को मुनव्वर कर रखा है, जो अपने चाहने वालों की ढाल भी है...

ऐ हक़ के वली! ऐ ख़ुदा की हुज्जत! ऐ इमामों की यादगार! ऐ शहीदों के ख़ून का बदला लेने वाले... हमारी नमाज़ें, हमारे सजदे, हमारी दुआएं, हमारे राज़ो-नियाज़, हमारी खुशी और हमारा ग़म...सब आपके नाम, आपकी याद, आपके इश्क़ और इंतेज़ार से जुड़ा है।

ऐ रसूलों की क़ुबूल होने वाली दुआ! ऐ सारे नबियों के वादे...ख़ुदा से दुआ कर दीजिए कि वह आपके ज़ुहूर में जल्दी कर दे...दिलों को आराम अता कर दे...आपकी आमद से दुनिया को रूहानियत और ईमान से भर दे!

ऐ सारी दुनिया में सबसे अफ़ज़ल वुजूद!

ऐ रूकू व सजदों के मायने!

दिलों ने रूह को ताज़गी बख़्शने वाली ठंडी-ठंडी हवा के इंतिज़ार में, एक दिल को छू जाने वाले पैग़ाम के इंतिज़ार में अपने दरवाज़े ख़ोल रखे हैं...हमारे दिल हमेशा से आपके आशिक़ थे।

ऐ अबा सालेह! ऐ ख़ुदा के नूर! ऐ वुजूद की हक़ीक़त! अज्जिल अला ज़ुहूरिक! ख़ुदा आपके ज़ुहूर में जल्दी करे!

कब आइएगा?

सलाम हो आप पर ऐ इमामत के चाँद! ऐ हुस्ने माहताब!

सलाम हो आप पर ऐ रसूलों के वारिस! पेशवाओं की यादगार! ऐ मेहदी!

ऐ वह ज़ात जो सूरत व सीरत में नबी[स०] की तरह और अख़लाक़ में अली[अ०] की तरह है। यूँ तो आप ज़ाहिर तौर पर हमारी निगाहों से ओझल हैं लेकिन हमारे दिलों में हिदायत आपके ज़रिए से ही जलवे बिखेर रही है।

हमारी इंतेज़ार करती हुई निगाहें सुबहे ज़ुहूर की उम्मीद पर चमक रही हैं। एक जुमे से दूसरे जुमे तक इंतेज़ार ही इंतेज़ार है।

ऐ ख़ुदा की हुज्जत! हम आपके इंतेज़ार में अपना दिल और अपनी आंखें आपकी राह में बिछाए हुए हैं...आप कब आएंगे?

दिल की गहराईयां आपके आसताने पर सजदा करने के लिए तड़प रही हैं...आप कब आएंगे?

ऐ मेरे मौला! कब आएंगे कि यह टूटा हुआ दिल अपने दिल की बात कह सके? वह कौन सी सुबह होगी जब हमारी आंखें आपके मुबारक वुजूद के दीदार से रौशन होंगी?

हां! बहुत बड़ा होगा वह दिन जब आप आएंगे...आपके हाथ में मूसा[अ०] की छड़ी होगी और दाऊद[अ०] की ज़ुबूर होगी।

कितना ख़ूबसूरत होगा वह वक़्त जब आप इस्लाम के परचम को बुलंद करेंगे और आपके सहाबी, आपके दोस्त आपके हाथ पर बैअत करेंगे...उस दिन दुनिया में इंक़ेलाब बरपा होगा...एक ऐसा इंक़ेलाब जिसके बाद सिवाए हक़ व इंसाफ़ के, मुहब्बत व मेहरबानी के कुछ बाक़ी नहीं रहेगा।

हां! उस दिन के बाद किसी यतीम की आंखों में आंसू नहीं होंगे, फिर कोई मां अपने बेटे की गुलामी के ग़म में नहीं घबराएगी, किसी चाहने वाले का ख़ूने नाहक़ इस ज़मीन पर नहीं बहेगा।

वह जो अली[अ०] का जांनशीन हो...वह जो फ़ातिमा[अ०] का बेटा हो, वह किसी पर ज़ुल्म होता कैसे देख सकता है?! वह किसी मज़लूम की आह को कैसे बर्दाश्त कर सकता है...किसी की बर्बादी को कैसे नज़रअंदाज़ कर सकता है।

ऐ मेहदी! ऐ ख़ुदा की हुज्जत! ऐ ख़ूने ख़ुदा का इंतेक़ाम लेने वाले कब आइएगा?

ऐ मौला! मज़लूमों की फ़रयादें सुनने के लिए, इस दुनिया से ज़ुल्म को ख़त्म करने के लिए और ख़ून से भरे इस माहौल को आज़ादी, इंसानियत और इंसाफ़ से भरने के लिए कब आइएगा? ऐ अबा सालेह कब आइएगा...

email: muammal@al-muammal.org

آج ہی ممبر بنئے
زرسالانہ
Rs.150

دوماہی مؤمّل لکھنؤ

द्विमासिक मुअम्मल लखनऊ MUAMMAL

उमदा तबाअत	عمدہ طباعت
आसान ज़बान	آسان زبان
क़ुर्आनी मालूमात	قرآنی معلومات
अख़्लाक़ी बातें	اخلاقی باتیں
आर्ट गैलरी	آرٹ گیلری
इस्लामिक पज़ल	اسلامک پزل
कामिक्स	کامکس

AL-MU'AMMAL CULTURAL FOUNDATION

546/203 Near Era's Lucknow Medical College Sarfarazganj, Hardoi Road, Lucknow-3 U.P. (India) Ph.: 0522-2405646, 9839459672

परवरिश के कुछ बुनियादी उसूल

■ तन्ज़ीम फ़ातिमा

सबसे बड़ा दिन

इन्सान के लिए सबसे बड़ा दिन वह है जिस दिन वह इस दुनिया में आंख खोलता है यानी अपनी सारी सलाहियतों और पोटेंशल के साथ एक बहुत छोटे से मकान से एक बहुत बड़ी और ख़ूबसूरत दुनिया में क़दम रखता है और यह तो हम जानते ही हैं कि यह सलाहियतें परवरदिगार ने उसकी ज़ात में रखी हैं। यूँ तो यह बच्चा पैदा होने के बाद हर चीज़ से बेख़बर होकर सिर्फ़ रो रहा होता है लेकिन अगर उसे मालूम होता कि उसे किस मक़सद के लिए इस दुनिया में भेजा गया है और क्यों उसके अंदर इतनी सलाहियतें रखी गई हैं तो वह अपनी ज़िंदगी के सारे मरहलों में ख़ुद को कभी इन्सानी बुलंदियों और अज़मतों से महरूम न करता।

सफ़र की शरूआत

बच्चा जैसे ही इस दुनिया में आंख खोलता है उसी वक़्त से वह जिस्मानी, ज़ेहनी, अक़्ली और पर्सनालिटी के ऐतबार से एक सफ़र की शुरूआत करता है और कुछ क़ानूनों के तहेत ज़िंदगी की स्टेजेस को तय करना शुरू करता है। अगर मां-बाप और परवरिश करने वालों को इन स्टेजेस के बारे में काफ़ी हद तक मालूमात हों तो इन मालूमात की मदद से वह अपने बच्चों को और उनकी ज़रूरतों को अच्छी तरह समझ सकते हैं।

सबसे बड़ा तोहफ़ा

इस दुनिया में किसी इन्सान के लिए एक बड़ा कारनामा यह है कि वह अच्छी परवरिश के ज़रिए फ़ाएदेमंद और अच्छे इन्सान समाज को दे सके। औलाद के लिए भी मां-बाप की तरफ़ से सबसे बड़ा, क़ीमती और ख़ूबसूरत तोहफ़ा यह है कि वह उनकी अच्छी परवरिश करके उन्हें एक अच्छा इन्सान बना दें वरना इस दुनिया में एक ऐसे इन्सान का इज़ाफ़ा करना जो जहन्नम वालों की तादाद बढ़ा दे किसी भी अक़्लमंद इन्सान की निगाह में हुनर नहीं है।

बुरी परवरिश

परवरिश के बहुत से रिज़ल्ट्स ऐसे होते हैं जो इसी दुनिया में ज़ाहिर हो जाते हैं और इन्सान की पर्सनालिटी को पूरी तरह बदल देते हैं। दूसरी तरफ़ आख़िरत में अच्छी परवरिश का एक अहम रिज़ल्ट यह है कि इन्सान को जहन्नम की आग से निजात मिल जाती है। यूँ तो इल्म और दीनी तालीमात का बड़ा मक़सद यह है कि वह सारे इन्सानों को जहन्नम की आग से बचाने की कोशिश करें लेकिन इसके साथ-साथ क़ुरआन ख़ास कर मोमिनीन को यह मशवेरा देता है कि ख़ुद को और अपनी फ़ैमिली को जहन्नम की आग से बचाओ और यह काम सिर्फ़ परवरिश के ज़रिए ही हो सकता है। लेकिन ख़्याल रहे कि हर परवरिश एक जैसी नहीं होती, यानी परवरिश अच्छी भी होती है और बुरी भी।

यहां बुरी परवरिश से मुराद बुराई की परवरिश नहीं है बल्कि कुछ वक़्तों में इन्सान अच्छी परवरिश करना चाहता है लेकिन परवरिश का तरीक़ा इतना ग़लत होता है कि इन्सान पर और ख़ास कर बच्चों पर उसका ग़लत और बुरा असर पड़ता है। रिज़ल्ट के ऐतबार से देखें तो सबसे बुरी परवरिश यह है कि इन्सान सिर्फ़ ज़बान से परवरिश का काम अंजाम दे। अगर किसी को परवरिश के नाम पर सिर्फ़ ज़बान चलाना आती हो तो बेहतर है कि वह अपना यह काम न करके परवरिश की यह अहम ज़िम्मेदारी किसी दूसरे को दे दे क्योंकि इन्सानी साइकोलॉजी कुछ इस तरह की है कि वह हर उस बात को पसंद नहीं करता है जिसके पीछे अमल न हो और हक़ीक़त में यह भी निफ़ाक़ की ही एक क़िस्म है। इसमें कोई शक नहीं है कि ज़बान में बहुत असर होता है लेकिन असर सिर्फ़ उस ज़बान में होता है जिसके साथ-साथ

इन्सान का दिल और उसका अमल भी हो।

सिर्फ़ ज़बानी परवरिश से क्यों बचना चाहिए

जब किसी मां ने रसूल अल्लाह[स०] से यह कहा कि मेरे बच्चे को आप खजूर खाने से मना कर दीजिए क्योंकि यह खजूरें बहुत खाता है और मेरे कहने से मानता भी नहीं है लेकिन अगर आप कहेंगे तो मान जाएगा। वह औरत जानती थी कि रसूल अल्लाह[स०] की ज़बान में कितनी तासीर है।

रसूल अल्लाह[स०] ने उस मां के जवाब में फ़रमाया कि तीन दिन बाद बच्चे को लेकर आना और तीन दिनों बाद जब वह बच्चे को लेकर आई तो आपने उस बच्चे को खजूर कम खाने की नसीहत की जिस पर उस मां को बहुत ताअज्जुब हुआ कि यह छोटी सी नसीहत तो उस दिन भी की जा सकती थी। इस देर और तीन दिन के इन्तिज़ार का राज़ रसूल अल्लाह[स०] ने यह बताया कि उस दिन आप[स०] ने खुद भी खजूरें खाई थीं और खजूर खाकर उसे न खाने की नसीहत करना परवरिश के उसूल के ख़िलाफ़ है।

परवरिश किसकी?

जब परवरिश की बात होती है तो आम तौर पर लोगों का ख़्याल बच्चों की तरफ़ जाता है और इन्सान का पूरा ध्यान और फ़िक्र बच्चों की तरफ़ होती है जिसके नतीजे में ज़बानी परवरिश की मुश्किल पेश आती है और कुछ नसीहत के जुमले कहकर मां-बाप मुतमईन हो जाते हैं कि हमने परवरिश का हक़ अदा कर दिया है जबकि परवरिश के क़ानून के मुताबिक़ अगर बच्चों की परवरिश करनी है तो उसकी पहली स्टेज यह है कि परवरिश करने वाला पहले खुद अपनी परवरिश करे ताकि उसकी परवरिश का बच्चों पर असर पड़ सके। इसलिए परवरिश के लफ़्ज़ को सिर्फ़ बच्चों से जोड़ देना परवरिश के रास्ते में सबसे बड़ी रुकावट है।

सबसे बड़ा ख़तरा

यह एक हक़ीक़त है कि समाज के हक़ में बेतरबियत बच्चे इतना बड़ा ख़तरा नहीं हैं जितना बेतरबियत मां-बाप और सोसाइटीज़ को बेतरबियत बच्चों से इतना ज़्यादा नुक़सान नहीं पहुंचा है जितना बेतरबियत बड़ी उम्र के इन्सानों से। वैसे यह भी सही है कि बेतरबियत बच्चे ही बाद में बेतरबियत इन्सान बन जाते हैं जो न सिर्फ़ अपने घर, फ़ैमिली बल्कि कभी-कभी हज़ारों लाखों इन्सानों की तबाही की वजह बन जाते हैं। ●

गुरूर और तकब्बुर

■ अनम रिज़वी

गुरूर इन्सान को इस बात पर उभारता है कि वह अपने आप को बड़ा और दुसरे को कमतर समझे। खुदा ने हम सबको बराबर बनाया है, हम सब उसकी नज़र में बराबर हैं, कोई भी छोटा या बड़ा नहीं है, तो फिर हम यह सोच भी कैसे सकते हैं कि हम बड़े और दूसरा इन्सान हमसे कमतर है।

घमंडी इन्सान इस क़दर नीच होता है कि उसे अपने में खूबी ही खूबी और दूसरों में बुराई ही बुराई नज़र आती है। हालांकि हमे अपनी बुराईयों और दूसरों की अच्छाईयों से आगाह होना चाहिए। दूसरों को नीच और कमतर समझने से इन्सान अपने आप को ऊँचा समझने लगता है लेकिन यह ख़सलत इन्सान में तभी आती है जब अल्लाह ने हमें ज़्यादा नेमतें दी हों। लेकिन हम इस बात का शुक्र करने के बजाए यह भूल जाते हैं कि यह सब हमें अल्लाह तआला ने दिया है और वह जब चाहे हम से ले भी सकता है। दौलत, हमारी शक्ल, ताक़त यह सब अल्लाह ही ने हमें दिया है तो हमें इस पर गुरूर नही करना चाहिए।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने गुरूर करने वाले इन्सान के बारे में इस तरह फ़रमाया है, "गुरूर करने वाला पस्त इन्सान होता है और जब उसे अपनी ज़िल्लत व पस्ती का एहसास होता है तो वह गरूर के साए में अपनी इस ज़िल्लत व पस्ती को छिपाने की कोशिश करता है।"

तकब्बुर, झूठ और जुल्म इन तीनों आदतों से लोगों को दुश्मनी और नफ़रत के अलावा कुछ नहीं मिलता।

हमें यह कोशिश करना चाहिए कि हम अपनी ग़लतियों और बुराईयों को समझ कर उन्हें सुधारने की कोशिश करें और किसी को भी अपने से कमतर न समझें। इसी तरह हम गुरूर जैसी बुरी आदतों से बच पाएगें। ●

कहानी

बीमार बच्ची

■ इशरत जहां

हम इस मुल्क और क़ौम का फ़्यूचर हैं और अपने वतन की लाज रखना हमारा सबसे पहला फ़र्ज़ है। नेकी चाहे छोटी से छोटी ही क्यों न हो, बेकार नहीं जाती। अपने आस-पास आपको बहुत से लोग दिखेंगे जो आपकी मदद के इंतेज़ार में हैं और आप उनकी मदद करके अपने फ़र्ज़ को पूरा कर सकते हैं।

यह कहानी इसी तरफ़ एक हल्का सा इशारा है।

मैं अपनी एक दोस्त को देखने अस्पताल आई थी। वहां मैंने देखा कि एक बच्ची कॉरिडोर में अकेले खड़ी है। सांवली सलोनी दस ग्यारह साल की बच्ची मुझे कुछ अजीब सी लगी। इस उम्र में बच्चों के चेहरे तो हंसते-मुस्कुराते फूलों की तरह तरो-ताज़ा होते हैं। लेकिन यह बच्ची तो पतझड़ के मुरझाए हुए फूल की तरह लग रही थी। चेहरे पर हसरतों और मायूसियों के साए मंडला रहे थे और आंखें आंसूओं से भरी हुई थीं, जैसे अभी छलक जाएंगी।

न मालूम क्यों मुझे फ़िक्र हुई कि यह बच्ची अकेली अस्पताल में क्या कर रही है?न जाने इसका कौन बीमार है? इतने में मैंने देखा कि एक औरत सुस्त क़दमों से चलती हुई हाथ में ढेर सारी पर्चियां पकड़े हुए इस बच्ची के पास आई और उससे कुछ कहा जिसे सुनकर इस बच्ची का चेहरा और भी उदास हो गया। अब मुझसे बर्दाश्त न हो सका और मैंने पास जाकर पूछा, ''क्या बात है?कुछ परेशान हो?''

वह औरत जैसे किसी हमदर्द के ही इंतिज़ार में थी, रूंधी हुई आवाज़ में बोली, ''यह बच्ची मदीहा! दिल की मरीज़ है। इसके दिल में सूराख़ है। ज़रा सा चलती है या काम करती है तो सांस फूल जाती है। स्कूल भी बड़ी मुश्किल से जाती है। काफ़ी दिनों से इसका इलाज इसी सरकारी अस्पताल में हो रहा था मगर आज डाक्टर ने कहा कि इसको प्राइवेट अस्पताल में एडमिट करा दो, इसका आप्रेशन होगा। हम ग़रीब लोग आप्रेशन के ख़र्चों और दवाओं के पैसे कहां से लाएंगे। हमारा तो गुज़र ही बड़ी मुश्किल से होता है। काश यह पैदा होते ही मर जाती और हमें इसकी तकलीफ़ का पता न चलता।'' इतना कहकर उसकी बर्दाश्त ख़त्म हो गई और वह दोनों हाथों से मुंह छुपा कर रोने लगी।

मैंने उस औरत को तसल्ली देते हुए कहा कि अपना एड्रेस दे दो, अगर मुझसे कुछ मदद हो सकी तो ज़रूर करूंगी।

वह औरत सख़्ती से बोली, ''छोड़ो भई! कहते तो सब यही हैं मगर यहां ग़रीबों की फ़िक्र किसे है? बस सब वादे करके भूल जाते हैं।'' यह कहकर

उसने हाथ में पकड़ी हुई पर्चियां वहीं फैंकीं और बच्ची का हाथ पकड़ कर चल पड़ी। मैंने फ़ौरन पेपर्स जमा किए। उनमें मदीहा के घर का एड्रेस भी था। मैंने वह पेपर्स बैग में डाले और घर आ गई। रात भर उस बच्ची की सूरत मुझे नज़र आती रही और मैं सोचती रही कि मैं इस बच्ची के लिए क्या कर सकती हूं?मेरे पास तो इतनी रक़म भी नहीं है जो मैं उसके आप्रेशन के लिए दे सकूं।

सोचते-सोचते एक बात मेरे ज़ेहन में आई कि यह वतन हमें बड़ी क़ुरबानियों के बाद मिला है। बहुत सारी जानों का नज़राना देने का बुनियादी मक़सद यही था कि आने वाली नस्लों को एक आज़ादी का.. ., मुहब्बत का माहौल दिया जाए। इस मुल्क का रहने वाला हर आदमी दूसरे के दुख दर्द को महसूस करे और एक दूसरे के काम आए।

मैं यह देखना चाहती थी कि हमारे मुल्क में यह सब कुछ है या नहीं। क्या हमारे मुल्क में लोगों में चाहत, मुहब्बत और अपनाइयत का एहसास है या नहीं? यही सोचते हुए मैंने "हिन्दुस्तान की एक मासूम कली" के नाम से मदीहा के बारे में एक कहानी लिख डाली कि शायद उसे पढ़कर कोई इस बच्ची की मदद करे। चूंकि मैं कहानियां वग़ैरा लिखती रहती थी और एडीटर साहब से मेरी जान-पहचान थी इसलिए उन्होंने मदद की अपील के साथ मेरी कहानी अपने अख़्बार में छाप दी। कहानी पढ़ते ही सबसे पहले मेरा भाई मेरे पास आया और बोला, "बाजी! सच में क्या यह सच्ची कहानी है?" और मैंने उसे मदीहा के बारे में सब कुछ बता दिया। यह सुनकर वह बोला, "बाजी! क्यों न हम अपने घर ही से शुरू करें।"

"क्या मतलब?" इतने में वह भाग कर अपने कमरे से अपनी पाकेट मनी वाला बाक्स ले आया और बोला, "बाजी! मैंने सोचा था कि इस बार अपनी पाकेट मनी जमा करके एक अच्छा सा नया बैट ख़रीदूंगा लेकिन मेरा ख़्याल है कि मदीहा का इलाज मेरे बैट से ज़्यादा ज़रूरी है।" यह सुनकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई और मैंने भी कहानियां वग़ैरा लिखने पर जो पैसे कमाए थे वह उठा लाई।

दूसरे दिन एडीटर साहब का फ़ोन आया कि बहुत सारे लोगों के ख़त, बहुत सी दुआएं, पैग़ाम और पैसे भेजे गए हैं।

मैट्रिक के एक स्टूडेंट का फ़ोन मेरे पास आया, उसने कहा कि मैंने दो साल ट्यूशन पढ़ाकर कुछ पैसे जमा किए हैं, सोचा था कि अब एक स्मार्ट फ़ोन ख़रीदूंगा लेकिन अब मैं यह पैसे मदीहा को देना चाहता हूं। वह हमारे मुल्क की आज़ाद शहरी है और उसकी मदद हम सब का फ़र्ज़ है।"

मैंने मदीहा का एड्रेस उसे दिया। वह ख़ुद जाकर पैसे दे आया। यह सारी बात मुहब्बत और ख़ुलूस की थी। इसलिए इतने पैसे जमा हो गए कि मदीहा का आप्रेशन हो गया।

मैं उसे देखने अस्पताल गई। उसे आई.सी.यू. में रखा गया था और वह बेहोश थी। उसके मुंह पर आक्सीज़न मास्क और जिस्म में अलग-अलग ड्रिप्स लगी हुई थीं लेकिन इसके बावजूद उसके चेहरे पर इत्मिनान था। मुझे देखते ही उसकी मां मेरा शुक्रिया अदा करने लगी। मैंने उसकी मां से कहा, "आप परेशान न हों। मदीहा ज़रूर ठीक होगी क्योंकि उसके साथ बहुत सारे लोगों की दुआएं हैं।"

एक बात और बताऊं, मदीहा के लिए छः बॉटिल ख़ून की ज़रूरत थी जिसे अस्पताल वालों ने ख़ुद मदीहा के लिए गिफ़्ट के तौर पर दिया था और बहुत सारे लोगों ने भी आकर ख़ून डोनेट किया था।

मदीहा के लिए इतने सारे लोगों की मुहब्बत देखकर मैंने सोचा कि इन 64 सालों में हमने बहुत कुछ पाया है। आज भी सब के दिलों में ख़ुलूस है, जज़्बा है, अपने हम वतनों के लिए मुहब्बत है। ●

ज़िंदगी से 10 सबक़

अज़ीम हाशिम प्रेमजी हिन्दुस्तान के बहुत बड़े बिज़िनेस टाईकून, विप्रो के चेयरमैन और हिन्दुस्तान के तीसरे सबसे अमीर आदमी हैं। टाईम मैगज़ीन ने 2004 में उन्हें दुनिया के 100 सबसे ज़्यादा असरदार लोगों में गिना था।

आई. आई. टी., दिल्ली के 37वें कन्वोकेशन फ़ंक्शन में अज़ीम प्रेमजी के ज़रिए दी गई स्पीच के एक हिस्से को हम यहां पेश कर रहे हैं...

ज़िंदगी के बारे में एक इंट्रेस्टिंग बात यह है कि आपको किसी चीज़ की इम्पोर्टेंस सिर्फ़ तभी महसूस होती है जब वह चीज़ आपकी ज़िंदगी को छोड़कर जाने लगती है। जब मेरे बाल काले से कुछ सफ़ेद और फिर पूरी तरह सफ़ेद हो गए, तब मैंने नौजवानी के मज़े और रोमांच को महसूस करना शुरू किया। उसी वक़्त मैंने ज़िंदगी में मिले कुछ सबक़ की सही मायने में क़द्र करना सीखा। चूंकि आप अपने कॅरियर की शुरूआत करने जा रहे हैं, मैं उन्हें आपके साथ बांट रहा हूं। मुझे उम्मीद है कि आपके लिए भी ये उतने ही फ़ायदेमंद साबित होंगे, जितने मेरे लिए थे।

फ़ाइनेंशल नज़रिए से हिन्दुस्तान दो बड़ी फ़ाइनेंशल ताक़तों में (700 बिलियन अमेरिकी डॉलर से ऊपर) से एक है और 7% से ज़्यादा की दर से तरक़्क़ी कर रहा है। हालांकि देश में एजुकेशन, रिर्सोसेज़, पानी, हेल्थ और सफ़ाई जैसी कई बुनियादी चुनौतियां भी मौजूद हैं, जिनका दूर किया जाना बाक़ी है।

1- मोर्चा संभालो

यह पहला ख़्याल था जो मेरे मन में तब आया जब चार दहाईयों से भी ज़्यादा पहले मैंने अमालनेर में विप्रो की फैक्ट्री में कदम रखा था। मैं 21 साल का था और पिछले कुछ साल कैलिफ़ोर्निया के स्टेनफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी इंजीनियरिंग स्कूल में बिता चुका था। कई लोगों ने मुझे सलाह दी कि हाइड्रोजेनेटेड ऑयल बिज़िनेस चलाने की चुनौतियों को क़ुबूल करने के बजाए एक अच्छी और आरामदेह नौकरी ज्वॉइन करना बेहतर होगा। पीछे मुड़कर देखने पर मुझे ख़ुशी होती है कि मैंने मोर्चा संभालने को तरजीह दी है।

2- अपनी ख़ुशी हासिल करो

मैंने यह सीखा है कि एक रुपया कमाने की अहमियत मुफ़्त में मिले पांच रुपयों से ज़्यादा है। हम जब इंटरव्यू लेते वक़्त लोगों से उनकी सबसे यादगार अचीवमेंट्स के बारे में पूछते हैं तो आमतौर पर वह उन्हीं अचीवमेंट्स का ज़िक्र करते हैं, जिन्हें हासिल करने के लिए उन्हें सबसे ज़्यादा मेहनत करना पड़ी। मेरी ख़ुद की ज़िंदगी में मैंने यही पाया है कि कोई भी चीज़ उतना सुकून नहीं देती जितना वह अचीवमेंट्स जो आपके अपने हों।

3- नाकामयाबी के रास्ते कामयाबी

अगला सबक़ जो मैंने सीखा है, वह यह कि हर बार कोई खिलाड़ी सेंचरी नहीं बना सकता। ज़िंदगी में कई चेलैंज होते हैं। आप कुछ चेलैंजों से हारते हैं और कुछ से जीतते हैं। आपको जीत का

जश्न जरूर मनाना चाहिए लेकिन इसे अपने दिमाग़ पर हावी नहीं होने देना चाहिए। जिस लम्हे कामयाबी आप पर हावी हो जाती है, आप नाकामी के रास्ते पर चलने लगते हैं।

अगर आपको नाकामयाबियों का सामना करना पड़ता है तो इसे भी नार्मल ढंग से लीजिए। हार को क़ुबूल कीजिए, इसमें अपनी कमी के बारे में ग़ौर कीजिए, उससे सीखिए और फिर आगे बढ़िए।

4- सीखने की चाहत

नर्म मिज़ाजी बहुत अहम है। घमंड और सेल्फ़-कांफ़िडेंस के बीच फ़र्क़ की लाइन बहुत पतली होती है। सेल्फ़-कांफ़िडेंट इंसान हमेशा सीखने के लिए तैयार रहते हैं। वहीं दूसरी तरफ़ घमंड की वजह से सीखने का प्रोसेस रुक जाता है। यह नाकामयाबी की तरफ़ पहला क़दम है।

5- हमेशा एक बेहतर तरीक़ा होता है

यह ज़रूर याद रखना चाहिए कि भले ही हम किसी भी काम को जितनी भी अच्छी तरह करें, उसे करने का हमेशा एक और बेहतर तरीक़ा हो सकता है। परफ़ेक्शन मंज़िल नहीं है, बल्कि एक सफ़र है। लगातार सुधार तभी होता है, जब हमें यक़ीन होता है कि ऐसा हो सकता है और जब हम इसके लिए काम करने को तैयार रहते हैं। क्रिएटिविटी और इनोवेशन के लिए कभी-कभी दूसरे मैदानों से भी इंस्प्रेशन लेने की ज़रूरत होती है।

6- जवाब दें, रिएक्शन नहीं

दो लोगों के बीच और कामयाबी व नाकामयाबी के बारे में डिफ़्रेंसेस की एक दुनिया होती है। डिफ़्रेंसेस यह हैं कि किसी सवाल का जवाब देने और रिएक्शन ज़ाहिर करने के बीच में दिमाग़ आता है। जब हम जवाब देते हैं, तब ठंडे दिमाग़ के साथ ग़ौर करते हैं और वही करते हैं, जो सबसे ज़्यादा सही होता है। हम अपना काम पूरे कंट्रोल के साथ करते हैं। जब हम रिएक्शन ज़ाहिर करते हैं, तब हम वही करते हैं, जो दूसरा शख़्स हमसे कराना चाहता है।

7- फ़िज़िकली फ़िट रहें

जब आप जवान होते हैं, तब अपनी हेल्थ को कोई ख़ास अहमियत नहीं देते लेकिन जब आप अपने काम के 24x7 शेड्यूल में जाते हैं, तब यह बहुत ज़रूरी हो जाता है कि आप वक़्त के प्रेशर में बिखर न जाएं और काम की ख़ातिर अपनी फ़िज़िकल फ़िटनेस के लिए ज़रूरी वक़्त की क़ुर्बानी न दे दें।

8- समझौता मत करो

महात्मा गांधी अक्सर कहा करते थे कि आपको अपने दिमाग़ की खिड़कियां तो ज़रूर खुली रखनी चाहिएं लेकिन अपने पैर हवा से उखड़ने नहीं देना चाहिएं। आपको यह ज़रूर तय करना होगा कि आप क्या हैं और यह मुश्किल नहीं है।

9- जीतने के लिए खेलो

जीतने के लिए खेलने का मतलब यह नहीं है कि गंदे और ग़लत तरीक़े से खेला जाए। जीतने के लिए खेलने का मतलब है कि हमारा और हमारी टीम का बेस्ट निकल कर बाहर आए। यह ज़्यादा से ज़्यादा के लिए कोशिश करने, अपना बेस्ट देने के जुनून और बेस्ट बनने की भूख़ से जुड़ा है। फिर भी इसका मतलब किसी भी क़ीमत पर जीत हासिल करने से नहीं है। यह हर वक़्त जीतने से भी जुड़ा हुआ नहीं है। यह दूसरों की क़ीमत पर जीतने से भी जुड़ा हुआ नहीं है। यह हर वक़्त इनोवेटिव और क्रिएटिव होने से जुड़ा हुआ है।

10- समाज को वापस दो

मैंने शुरू में कहा था कि हालांकि भारत ने शानदार तरक़्क़ी की है लेकिन हमारे सामने अभी भी कुछ बड़े चैलेन्जेस हैं। उनके हल के लिए अपनी तरफ़ से थोड़ी-थोड़ी कोशिश करना हम सभी की सामाजिक ज़िम्मेदारी है। उन सभी चुनौतियों में मेरे लिए सबसे अहम एजुकेशन है।

हमारे सामने एक बड़ी अजीबो-ग़रीब सिचुएशन है। जहां एक तरफ़ हमारे पास ऐसी नौकरियां हैं जिनके लिए क़ाबिल लोगों की कमी है, वहीं दूसरी तरफ़ तेज़ी से बढ़ती बेरोज़गारी और ग़रीबी है। इन दोनों किनारों को जोड़ने के लिए सिर्फ़ एक रास्ता है और वह यह कि ऐसी एजुकेशन दी जाए जो क्वॉलिटी और स्किल से भरी हुई हो और जो सबकी पहुंच में हो।

मैं आप सभी को आपकी ज़िंदगी और करियर की दिली मुबारकबाद देता हूं।

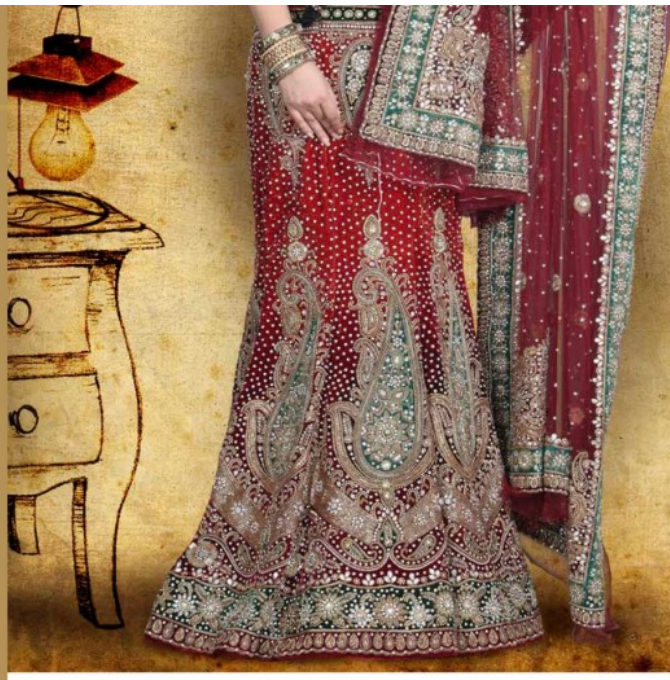

HK

KAZIM

Zari Art

All Kinds of
Sarees, Suits
& Lehanga Chunri

Hata Dhannu Beg
Kazmain Road
Lucknow

Contact No.
0522-2264357
9839126005

एहकाम

हैज़ (पीरियड्स)

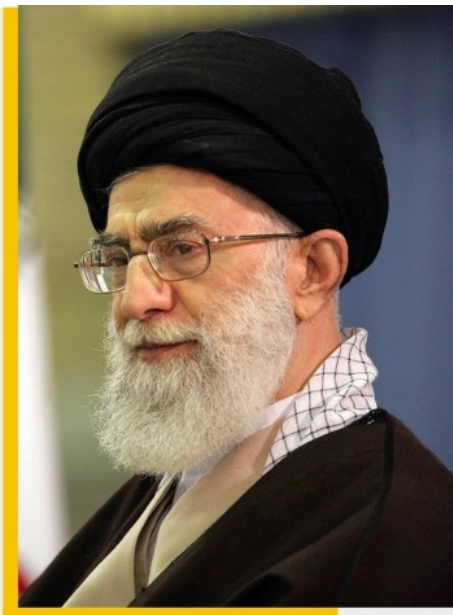

सवालः हैज़ या पीरियड्स किसे कहते हैं और इसकी पहचान क्या है?

जवाबः हर महीने औरत को जो ख़ून आता है उसे हैज़ कहते हैं। इसकी सबसे बड़ी पहचान यह है:-

(1) कम से कम तीन दिन और ज़्यादा से ज़्यादा दस दिन तक आता है।

(2) लाल रंग का या थोड़ा कालापन लिए हुए होता है।

(3) गाढ़ा होता है।

(4) गर्म होता है।

(5) तेज़ और थोड़ी जलन के साथ निकलता है।

सवालः पीरियड्स के बीच औरत पर इस्लाम की तरफ़ से क्या एहकाम जारी होते हैं?

जवाबः नीचे दी गई चीज़ें पीरियड्स के बीच हराम हो जाती हैं:

(1) ऐसी सारी इबातें जिन में तहारत यानी वुज़ू, ग़ुस्ल या तयम्मुम ज़रूरी हो, हराम हैं जैसे नमाज़, रोज़ा, तवाफ़ और एतेकाफ़। इसीलिए औरत पीरियड्स के बीच नमाज़े मय्यत पढ़ सकती है क्योंकि इसमें वुज़ू ज़रूरी नहीं है।

(2) क़ुरआने करीम के हर्फ़ों का छूना और ख़ुदा के नामों और ख़ास सिफ़तों को छूना भी हराम है। इसी तरह नबियों और मासूम इमामों के नामों और हज़रत ज़हरा के नाम को छूना भी हराम है।

(3) ऐसे सूरे जिनमें सजदा वाजिब है, उनका पढ़ना। यहां तक कि उनका एक हर्फ़ भी पढ़ना हराम है। वह सूरे जिनमें सजदा वाजिब है वह यह हैं: (1) 32वां सूरा (अलिफ़-लाम-मीम तनज़ील) (2) 41वां सूरा (हा मीम) (3) 53वां सूरा (वन नज्म) (4) 96वां सूरा (इक़रा)।

(4) मस्जिदुल हराम और मस्जिदुन्नबवी में जाना चाहे एक दरवाज़े से जाए और दूसरे से निकल जाए।

(5) दूसरी मस्जिदों में ठहरना हराम है लेकिन गुज़र सकती है। लेकिन यह मकरूह है। इसी तरह इमामों के हरम में भी ठहरना सही नहीं है।

सवालः नमाज़, रोज़ा वग़ैरा पीरियड्स में औरत पर हराम हो जाते है तो क्या बाद में उनकी क़ज़ा होगी या यह छुटी हुई इबादतें माफ़ हो जाएंगी?

जवाबः पीरियड्स के बीच जो रोज़ाना की नमाज़ें छूट जाएंगी वह माफ़ हैं और उनकी क़ज़ा वाजिब नहीं है। लेकिन छूटे हुए रोज़ों की क़ज़ा करना वाजिब है। यानी अगर रमज़ान में जितने रोज़े छूटेंगे उनकी क़ज़ा रमज़ान का महीना ख़त्म होने के बाद से वाजिब होती है और यह ज़रूरी है कि अगला रमज़ान आने से पहले उनकी क़ज़ा कर ली जाए।

सवालः पीरियड्स वाली औरतें कितनी तरह की होती हैं और क्या उनमें अलग-अलग तरह से पीरियड्स होते हैं?

जवाबः औरतों के पीरियड्स उनके रख-रखाव, माहौल, रहने की जगह वग़ैरा के एतेबार से अलग-अलग हो सकते हैं। इसलिए इस्लाम ने इनको छः क़िस्मो में बांट दिया है:

(1) मुबतदेआः यानी शुरूआतीः वह लड़की जिसे पहले-पहले ख़ून आना शुरू हुआ हो।

(2) मुज़तरेबाः यानी बीच में अटकी हुईः वह पहले कई बार ख़ून देख चुकी है मगर उसका कोई रूटीन नहीं बना है या उसका रूटीन बदल गया है।

(2) नासियाः यानी भूली हुई। वह औरत जो अपने पीरियड्स की टाईमिंग भूल गई हो जैसे वह प्रग्नेंट औरत जो प्रग्नेंसी के बीच या दो साल दूध पिलाने की वजह से अपने पीरियड्स की टाईमिंग भूल गई हो।

(4) वक़्तियाः यानी वह औरत जिसको हर महीने यह तो पता होता है लकिन कितने दिन तक इसी तरह चलेगा यह पता नहीं होता।

(5) अददियाः यानी वह औरत जिसको महीने में कितने दिन मेन्सेस आएंगे, यह तो पता होता है लकिन कब से शुरू होंगे यह वह नहीं जानती।

(6) वक़्तिया व अददियाः यानी वह औरत जिसे पीरियड्स कब से शुरू होंगे और कब तक चलेंगे, दोनों पता होते हैं।

इन सब औरतों के एहकाम भी अलग-अलग हैं। ऊपर बताई हुई क़िस्मों में से आप किस क़िस्म में आती हैं, यह जानना आपके लिए ज़रूरी है।

अपनी क़िस्म को तय करने के बाद नम्बर आता उस क़िस्म के एहकाम को जानने का जिन पर आपकी इबादतों का दारोमदार है। लेकिन यह हम बताएंगे अगले इशू में... ●

साइंस

साइंस है क्या

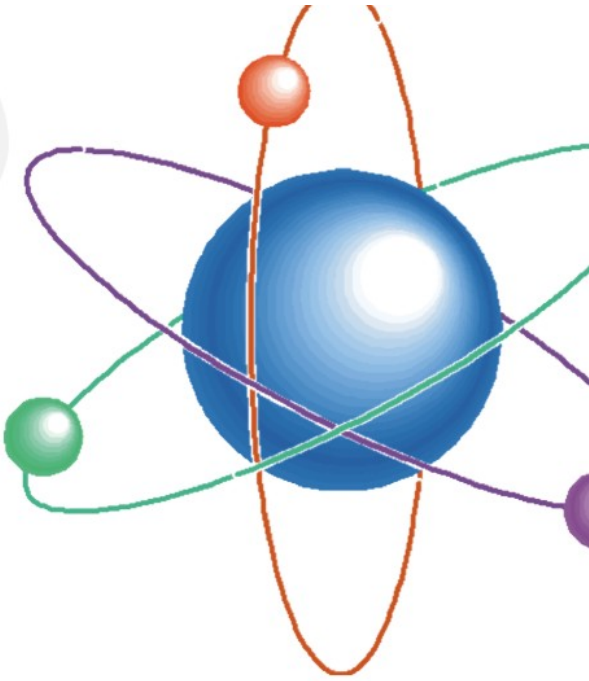

साइंस किसी एक समाज की पैदा की हुई नहीं है बल्कि यह तो अलग-अलग समाजों और लोगों की पैदावार है। साइंस तो शुरू से ही इंसान के साथ रही है। उस वक़्त भी जब वह गुफाओं में रहा करता था और आज भी जब हर बच्चा पैदाईशी तौर पर खोजी होता है, वह भी अपने आस-पास की चीज़ों के बारे में जानना चाहता है। इस लिहाज़ से अगर यह कहा जाए कि हर बच्चा पैदाइशी तौर पर साइंटिस्ट होता है तो ग़लत नहीं होगा। धीरे-धीरे इंसान उन बातों को छोड़ देता है जिनमें उसे कोई फ़ाएदा नहीं दिखता और इस तरह पैदाईशी साइंटिस्ट ख़त्म होता चला जाता है। लेकिन सिर्फ़ वही बातें उसको याद रह जाती हैं जिन्हें वह ज़रूरी समझता है। आज भी घरों में जब नानी अम्मा चने की दाल का हलवा बनाती हैं तो वह चाश्नी में दाल डालने से पहले उससे खिचने वाले तारों का ग़ौर से जाएज़ा लेती हैं। उन्हें ख़ूब पता होता है कि अगर एक तार का भी फ़र्क़ रह गया तो या तो दाल फूल जाएगी या हलवा जमेगा ही नहीं और यह फिर पत्थर जैसा सख़्त हो जाएगा। यह सब क्या है? यह आब्ज़र्वेशन, इससे सीखना और फिर ग़ौर करना यही सब साइंस है! चाहे नतीजे में हलवा तैयार हो या कोई गाड़ी हो या कम्प्यूटर।

यह बात समझ लेनी चाहिए कि साइंस न तो किसी एक ख़ास इलाक़े के लोगों की जागीर है और न किसी मज़हब या क़ौम की। साइंस को इंसानों का कलेक्टिव प्रेक्टिकल ख़ज़ाना है जिसमें हर इलाक़े, हर क़ौम और हर नस्ल के लोगों ने हिस्सा डाला है।

साइंटिफ़िक मैथड का बुनियादी जाएज़ा

साइंटिफ़िक मैथड साइंसी सवाल पूछने और उनका जवाब ढूंढने के तरीक़े को कहते हैं जो आब्ज़र्वेशन और तर्जुबों पर बेस्ड होता है। साइंटिफ़िक मैथड के यह काम हैं :-

सवाल करना
बैकग्राउंड रिसर्च करना
अपने ज़हन में कोई फ़र्ज़ बनाना
इस फ़र्ज़ को तर्जुबे करके परखना
तर्जुबों से मिलने वाले डेटा का जाएज़ा लेना
अपने रिज़ल्ट्स को दूसरों तक पहुंचाना ताकि उनको और परखा जा सके।

साइंटिफ़िक मैथड-एक ज़हनी ख़ाका

साइंटिफ़िक मैथड तर्जुबा करने का एक अमल है जिसे आब्ज़र्वेशंस को खोजने और जवाबों को तलाश करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। साइंटिस्ट इसे दुनिया में फैली हुई चीज़ों में ज़रूरी कनेक्शन को समझने के लिए इस्तेमाल करते हैं। दूसरे अलफ़ाज़ में वह ऐसे तर्जुबे करते हैं जिनसे वह जान सकें कि अगर एक चीज़ में कोई बदलाव लाया जाए तो उसका दूसरी चीज़ पर किस तरह, कैसा और किस वक़्त असर होता है। अकसर वक़्तों में वह अपने थ्योरीज़ को परखने के लिए तर्जुबे करके देखते हैं कि क्या एक चीज़ में एक ख़ास बदलाव लाने से दूसरी चीज़ पर वही असर हो रहा है जैसा कि उन्होंने सोचा था?

सवाल करना

जब आप किसी चीज़ को देखकर कोई सवाल करते हैं तो साइंटिफ़िक मैथड की शुरूआत यहीं से हो जाती है। कैसे, क्या, कब, कौन, कौन सा, क्यों

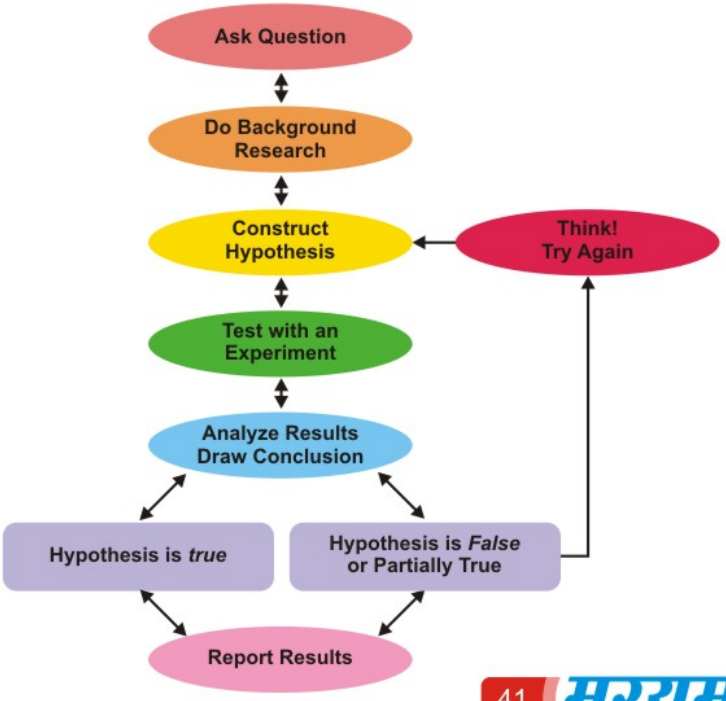

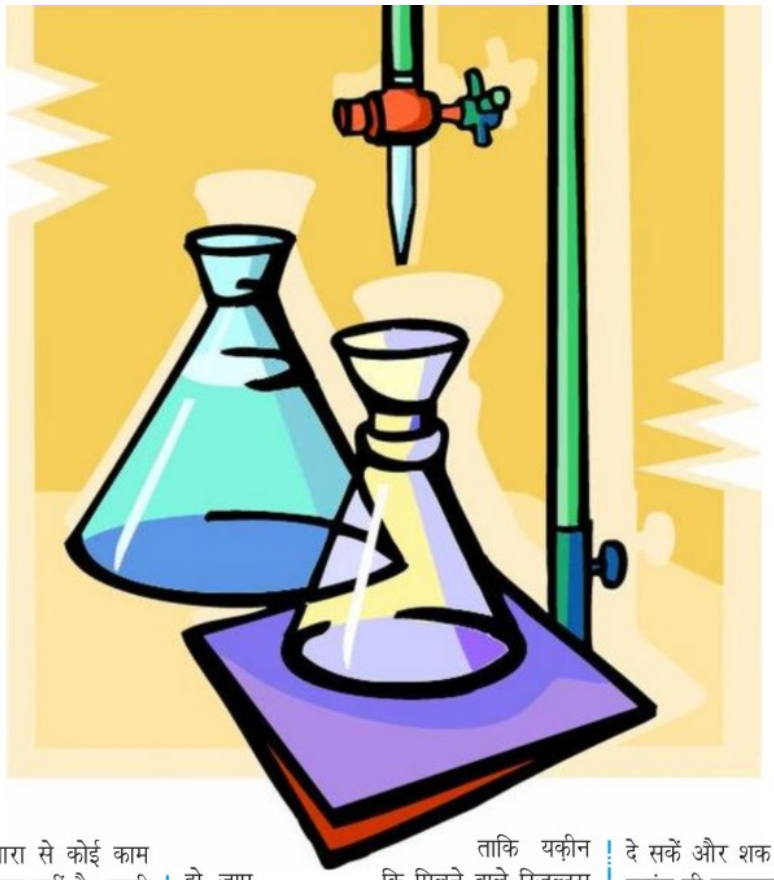

और कहां, इस तरह के सारे साइंसी सवालों के जवाब ढूंढने का रास्ता साइंटिफ़िक मैथड को अपनाने में है। मगर ख़्याल रहे कि साइंटिफ़िक मैथड आपको सिर्फ़ इन सवालों के जवाब तलाश करने में मदद दे सकता है, जो ऐसी चीज़ों के बारे में हों जिनको नापा-तौला जा सके या जिनके डेटा से हिसाब-किताब किया जा सके।

बैकग्राउंड रिसर्च करना

जब अपने सवालों का जवाब तलाश करने का एक प्लान बनाया जाता है तो यह याद रखना ज़रूरी है कि दोबारा से कोई काम बिल्कुल शुरू से करने की ज़रूरत नहीं है। बाक़ी लोगों का किया गया पिछला काम इस्तेमाल किया जा सकता है और उससे फ़ायदा उठाया सकता है। एक तेज़ समझ वाला साइंटिस्ट लाइब्रेरी, किताबें, साइंसी मैगज़ीन, डॉक्यूमेंट्रीज़ और इंटरनेट पर रिसर्च के मैटर का इस्तेमाल करता है। इस तरह वह पिछले लोगों की ग़ल्तियों से भी बचता है और पहले से किया गया काम दोहराने की ज़रूरत भी नहीं पड़ती।

अपने ज़हन में थ्योरी बनाई जाती है

थ्योरी पूरी तरह बेबुनियाद तो नहीं होती मगर इसे साबित करने के लिए कोई ठोस सुबूत भी नहीं होता। आम तौर पर साइंस की ज़बान में इसको यूं लिखा जाता है:-

अगर... तुम...होगा

अगर मैं यह करूं तो यह होगा।

थ्योरी इस तरह से बनाई जाती कि उसे आसानी से परखा जा सके, नापा-तौला जा सके। इसीलिए इसे इस तरह से बयान किया जाता है कि वह असली सवालों का जवाब देने में मददगार हो।

तर्जुबे करके परखना

तर्जुबे ही हमें बताते हैं कि हमारी थ्योरी सही है या ग़लत। यह ज़रूरी है कि तर्जुबे फ़ेयर या ईमानदारी वाले हों। यह तभी हो सकता है जब तर्जुबे में इस्तेमाल होने वाले वैरियेबिल्स में से किसी एक को बदला जाए और बाक़ियों को रहने दिया जाए।

इसी तरह यह भी बहुत अहम है कि तर्जुबे को कई बार दोहराया जाए ताकि यक़ीन हो जाए कि मिलने वाले रिज़ल्ट्स बाई-चांस नहीं हैं बल्कि किए गए तर्जुबों से साबित हैं।

तर्जुबों से हासिल होने वाले डेटा का जाएज़ा लेना

तर्जुबों के पूरा हो जाने के बाद पैमाईश और नाप-तौल का काम किया जाता है और इससे मिलने वाले डेटा का जाएज़ा लिया जाता है ताकि साइंटिफ़िक फ़ैक्टर्स को गहराई से समझा जा सके। इसी से सही मायनों में पता चलता है कि थ्योरी ठीक थी या ग़लत।

यह थ्योरीज़ अक्सर तर्जुबों और डेटा के आब्ज़र्वेशन से ग़लत साबित हो जाती हैं और यही रिज़ल्ट्स उनको और दूसरी थ्योरीज़ बनाने और साइंटिफ़िक रिसर्च को आगे बढ़ाने में मदद देते हैं। थ्योरी ग़लत होने की सूरत में उसी को देखते हुए नई थ्योरीज़ बनाते हैं और साइंटिफ़िक मैथड को फिर से लागू करते हैं। यह बात साइंसी दुनिया में बहुत ख़ास है कि अगर एक तर्जुबे को कई बार करने से एक थ्योरी ठीक साबित हो जाए, तब भी साइंटिस्ट उसको अलग-अलग तरह के और तर्जुबों से परखते हैं ताकि थ्योरी के सही होने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा सुबूत दे सकें और शक की कोई गुंजाइश न रहे। यही साइंस की ख़ूबसूरती है।

अपने रिज़ल्ट्स को दूसरों तक पहुंचाना ताकि उनको और परखा जा सके

साइंस की दुनिया में पीर-रिव्यू की बड़ी अहमियत है। इसका मतलब यह है कि एक साइंटिस्ट या ग्रुप के साइंटिफ़िक रिज़ल्ट्स को कोई साइंटिस्ट, ग्रुप, साइंस के स्टूडेंटस या कोई साइंटिफ़िक आर्गेनाईज़ेशन परखे। प्रोफ़ेशनल साइंटिस्ट अपने साइंटिफ़िक रिज़ल्ट्स को एक रिपोर्ट की शक्ल में साइंस-रिलेटेड मैगज़ीन्स, जर्नल्स या कांफ्रेंसों में पेश करते हैं।